मिथिलाक लोकदेवता

प्रीति ठाकुर



मिथिलाक लोकदेवता



प्रीति ठाकुर ‘‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’’ (२००८) आ ‘‘मैथिली चित्रकथा’’ (२००९)क लेखिका छथि। ई हुनकर तेसर पोथी छियन्हि।

प्रीति ठाकुर द्वारा

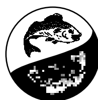


१ गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

२ मैथिली चित्रकथा

मिथिलाक लोकदेवता

प्रीति ठाकुर



1st Edition 2010 of Mithilak Lokdevta
(Maithili Language)
by Preety Thakur
and Published by Shruti Publication,
8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel: 011-25889656, 25889658 | Fax: 011-25889657

ISBN: 978-93-80538-24-2

Price: Rs. 200/- (INR)- for individual buyers
US $ 80 for libraries/institutions (India & abroad)

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: 8/21 भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- 110008
दूरभाष: 011-25889656-58 फैक्स: 011-25889657

website:// www.shruti-publication.com
email: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed by AJAY ARTS, Delhi-110002 Tel. 011-23288341
Distributor: Dr. Umesh Mandal Mob: 09931654742

ओम आ आस्था लेल



अपन श्वसुर स्व. कृपानन्द ठाकुर
(1939–1995) क स्मृतिमे

अनुक्रम



मोती सायर	......	25
गांगोदेवी	......	30
लालबन बाबा	......	34
गरीबन बाबा	......	38
बिहुला	......	42
सीता आ सुग्गा	......	47
सीता, गाए आ खिखिर	......	50
अयाची मिश्र आ शंकर मिश्र	......	54
पक्षधर मिश्र	......	59
उगना	......	61
मीरां साहेब	......	66
अमर बाबा	......	70
बगियाक गाछ	......	73
सामा चकेबा	......	81
चालनि-बाढ़नि	......	91
डेढ़ बितना	......	93
जेहन करनी	......	105
चारि बटोही	......	119

dFkk vk dYiuk

f

”मिथिलाक लोकदेवता“ ऐ संग्रहमे कथा कहल गेल अछि; आ कथा कहबाक विधि कएक तरहक होइत अछि । बच्चामे हमर दादी हमरा सभकँ कथा सुनबैत छलीह। दादी राजमहलसँ छलीह आ जतेक रास कथा हुनका आबै छलन्हि से सोचि हमरा आश्चर्य होइत अछि।

घरमे अरिपन बनेनाइ कहिया ककरासँ सिखलौं से मोन नै अछि। मुदा कथा कहबामे आ अरिपन बनेबामे दुनूमे निश्चिन्त भऽ कऽ काज करबाक आवश्यकता होइ छै। दादी स्थिर भऽ कऽ कथा कहै छलीह। ओ अपन खास शैलीमे बिन हरबड़ेने कथा कहैत छलीह । जाड़क मासमे दादी सीरकमे घोसियाएल रहै छलीह। सभ बच्चा ओइ गरम सीरकमे पैसि जाइ छल, जकरा जगह नै भेटै, से बाहरे रहि जाइ छल– कथा–पिहानी सुनिते सुनिते बच्चा सभ सुति जाइ छल । बाबाक एक्के टा खिस्सा होइ छलन्हि, गोनू झा बला खिस्सा मुदा सेहो रंग–बिरंगक। से वएह अरिपन आ खिस्सा मिल कऽ ऐ खिस्सा संग्रहक निर्माण केलक अछि।

ऐ संग्रहमे बारह टा खिस्सा सचित्र देल गेल अछि आ छह टा खिस्सा बिन कथोपकथनक। ओइ छबोटा खिस्सामे सँ एकटा खिस्सा ”बगियाक गाछ“ मे कथोपकथन नै अछि, मुदा ओ पूर्ण रूपेँ चित्रित अछि। शेष पाँच टा खिस्सामे रेखाचित्र टा अछि, ऐ सभमे नहिये कथोपकथन अछि आ नहिये ओ सभ

चित्रित अछि। ओ छबो खिस्सा हम एतए दऽ रहल छी।

हमर पछिला दू टा पोथी "गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा" आ "मैथिली चित्रकथा"क सम्बन्धमे बहुत रास शुभकामना आ बधाइ भेटल छल। मुदा किछु गोटेकेँ चित्रकथाक किछु तथ्यसँ असहमति छलन्हि । खास कऽ कालिदासक मिथिलाक यादव कुलमे जन्म लेबाक वर्णनपर आ उच्चैठ भगवतीक वर्णन पर। पहिल गप तँ ई जे जइ कालिदासक हम वर्णन केने छी से 'मेघदूतम" क लेखक कालिदास नै छथि कारण मेघ सभ ठाम उड़िया कऽ गेल मुदा मिथिला गलतीयो सँ नै आएल, ओ कालिदास मिथिलाक रहितथि तँ कखनो कोनो वर्णन मिथिलाक तँ देबे करितथि। दोसर गप जे मिथिलाक यादवक किछु कुलमे कालिदासक अभ्यर्थना होइत अछि आ से हमर कथाक आधार अछि। तेसर बौद्ध धर्मक समाप्तिक बाद "उग्रतारा" पहिने "भगवती काली" आ फेर "दुर्गा" बनि गेलीह, से ऐतिहासिक तथ्य थिक।

ई पोथी चित्रशृंखला (माने कॉमिक्स) नै अछि । ई नेना–भुटका लेल चित्रक माध्यमसँ कथा कहबाक प्रयास अछि जकरा "ग्राफिक" वा "इल्यूस्ट्रेटेड" कथाक पोथी वा चित्रकथाक संग्रह कहि सकै छिऐ। किछु गोटेकेँ हमर पहिल दू पोथीमे वर्णित "नैरेटेड बाइ गजेन्द्र ठाकुर" शब्दपर आपत्ति छलन्हि । आइ काल्हि दोसराक छोटसँ छोट योगदानकेँ लेखकगण अभिलेखित करै छथि– के बैक कवर बनेलक/ के फ्रंट कवर बनेलक/ कोन फोटो के देलक/ के टाइपमे सहयोग देलक/ के कोरल ड्रॉ वा फोटोशॉपमे पोथीकेँ नव रूप देबामे सहयोग देलक/– ई सभ सेहो लेखकगण अभिलेखित करै छथि । खएर ... ऐ दुनू पोथीक निर्माण हम अपन बेटा ओम आ बेटी आस्था लेल केने रही मुदा ई देश–विदेशक मैथिली

भाषी बच्चा सभमे ततेक ने लोकप्रिय भऽ गेल जे ऐ तेसर पोथीक लिखबाक आवश्यकता पड़ि गेल। ऐ मे कथा कहबाक विधि आ ओकर सचित्र कल्पना क्रमिक रूपमे देल गेल अछि। कोना कथा सुनी आ ओइ कथाक कोन अंशकेँ चित्रांकन लेल चुनी, फेर ओइमे कोना रंग भरी आ फेर ओइ रंग–भरल चित्रमे कोना कथोपकथन भरी । ई सभ गप बच्चाक कल्पनाशीलताकेँ बढ़ा सकत, संगे कल्पना कोना साक्षात सत्य बनि जाइ छै सेहो देखा सकत। हमर श्वसुरक मृत्यु हमर बियाहक पहिने भऽ गेल छलन्हि मुदा जखन हम बच्चा रही तखन ओ हमरा देखने रहथि, हुनकर सत्यवादिताक चर्चा बच्चेसँ हम सुनने छी आ हुनकर किछु लक्षण हमर पतिमे सेहो आएल छन्हि। ई संग्रह अपन श्वसुरक स्मृतिमे, जे नै तँ अपन पुत्रकेँ ककरोसँ जाति–क्षेत्रक आधारपर भेद करबाक पाठ आ ने असत्यसँ हारि कऽ बैसि जएबाक पाठ सिखेने छलथिन्ह ।

”

¼1½

lkek pdsck

सामाक पूजा होइत अछि कार्तिक शुक्लपक्षमे भरदुतियासँ पूर्णिमा धरि। मुदा दिन देखि कऽ पंचमी धरि ई शुरु होइत अछि। नव खढ़क वृन्दावन बनैत अछि। माटिक सप्तर्षि, सामा, चकेवा आ चुगला बनैत अछि। एक पाँतीमे सात टा चिड़ै–सतभैयाँ, खररुचि आ बाटो बहिनो– दू टा चिड़ै दू मुँहे घुमल– बनाओल जाइत अछि। नाम–नाम ”सन“सँ बनाओल जाइत अछि चुगला।

एकटा सामाक पौती सेहो बनैत अछि, जइमे सामा–चकेबा लेल चूड़ा–गुड़ राखल जाइत अछि।

द्वारकामे कृष्णक कन्या छलीह सामा आ हुनकर भाइ रहथि साम्ब आ माता रहथिन्ह जाम्बवती।

सामाकेँ मुनि चारूवक्त्रसँ प्रेम भऽ गेल मुदा चूड़क कृष्णकेँ ई गप कहि देलक। कृष्ण सामाकेँ चिड़ै बनि बोनमे विचरण करबाक श्राप दऽ देलन्हि। तखन सामा सेहो चूड़ककेँ श्राप देलन्हि जे पृथ्वीक स्त्रीगण चूड़कक मुँहमे आगि लगौतीह। सामा चिड़ै बनि वृन्दावन चलि गेलीह। चारूवक्त्र कठोर तपस्या करऽ लगलाह। तखन शंकर प्रकट भेलाह। चारूवक्त्र सेहो चिड़ै बनबाक वरदान मांगलन्हि आ चकवा चिड़ै बनि सामाक संग आबि गेलाह।

एम्हर साम्ब विष्णुक तपस्या केलन्हि। कोना सामा आ चकेवा मनुष्य रूपमे घुरताह, तकर विधि विष्णु बतेलखिन्ह।

स्त्रीवर्ग गामे–गाम घरे–घर रेशम वस्त्र पहीरि चारूवक्त्र सहित साम्ब, सामा, चूड़क, वृन्दावन आ सातो ऋषिक मुरूत बना कऽ रातिमे ऐ सभकेँ बाँसक डालीमे राखि कऽ, दीप जरा कऽ, माथपर लऽ घुमथु। पूर्णिमा धरि कार्तिक शुक्ल पक्षमे सभ राति उत्सव हुअए। आ तखन सामा श्रापसँ मुक्त हेतीह। आ तखन साम्ब भरि नग्र घुरि एलाह आ राज्यक स्त्रीगणकेँ सामा पूजाक आज्ञा देलन्हि। आ तखन सामा अपन रूपमे घुरि अएलीह।

सामा जखन अपन शरीर पओलन्हि तँ ऐ रहस्यक कारण अपन सखी सभसँ पुछलन्हि तँ ओ सभ कहलन्हि जे ई सम्भव भेल नै भाएसँ, नै पितासँ आ नै आन कोनो बन्धुगणसँ, वरन मात्र भाइ साम्बसँ। सामा कहलन्हि जे हमर एहेन भाइ छथि, से जीबथु। भाइ सन कियो दोसर बन्धु नै।

चूड़क्क वृन्दावनमे आगि लगाएब आ साम्बक कुकुड़ झाँझीक यमुनासँ पानि आनि ओकरा मिझेबाक प्रयास सामा आ चारूवकक लेल सतभाँइ पक्षी द्वारा हुनका उड़ितेमे दाना खुएनाइ आ बेरा–बेरी पीठपर लऽ उड़नाइ, मनुष्य रूपमे आपस एलापर श्रीकृष्ण द्वारा हुनका लोकनिक राज्यमे प्रवेश निषेध आ साम्ब द्वारा हुनका सभकेँ राज्यक बाहर जोतल खेतमे बैसायब सेहो ऐ कथाक अंग अछि, जकरा कथा कहबा काल घोंसियेबाक चाही। ऐ सँ प्राणी, चिड़ै आ जानवरक प्रति बच्चामे सहिष्णुता आएत।

¼2½
pkyfu&ck<fu

चालनि बाढ़निकेँ खौंझाबैत रहै छलै। चालनि बाढ़निकेँ कहै छलै– जे तोरा तँ लोक एम्हरसँ ओम्हर ओंघराबैत रहैत छौ। बाढ़नि बेचारी चुप रहै छलि। सोचै छलि– ई चालनि घर

भरिमे सौंसे गन्दा पसारैए आ हम भोरसँ साँझ धरि तकरा साफ करै छी आ तैयो देखियौ केना बाजैए। मुदा सभ दिन एक्के तँ नै होइ छै– एक दिन बाढ़नि कहलक . गै चलनी तूँ हमरा दूसै छैँ, जकरा देहमे छै सत्तरि हजार भूर।

¼3½
M< fcruk

कोनो एकटा गाम छलै, ओतऽ एकटा बुढ़िया रहै छल । ओकरा एकटा डेढ़ बीतक बेटा छलै । वएह छल डेढ़ बितना। डेढ़ बितनाकँ बाप नै छलै ।

ओ सभ गरीब छल। खेनाइ जुमिते नै छलै से पोथी कतऽ सँ अबितै। बिना पोथी लेने ओ पाठशाला जाइ छल। गुरूजी ऐलेल ओकरा दबारै छलखिन्ह। बुढ़ियाक माए ओकरा एकटा गाय देने रहै मुदा सेहो बाँझ निकलि गेलै। ओ नै दूध दै छलै आ ने ओकरा एकोटा बच्चा भेलै। आ जखन बच्चा नै भेलै तँ ओ दूध कतऽ सँ दइतै।

बुढ़िया डेढ़ बितनाकँ कहलकै जे गाएकँ बोनमे कोनो गाछमे बान्हि आ जे ओकरा बाघ खा जेतै आ ओकरासँ छुटकारा भेटत, मंगनीमे माएक देल ऐ गाएकँ खुआबऽ पिआबऽ पड़ैए। जखने डेढ़ बितना गाएकँ बोनमे गाछमे बान्हि कऽ घुरल तखने एकटा बुढ़िया ओइ गाएकँ अपन घर लऽ गेल। रस्तामे एकटा पौरकी रस्तापर पड़ल छलै, ओकर एकटा टांग टूटल छलै। डेढ़ बितना ओकरा उठा लेलक आ गामपर आनि लेलक। बुढ़िया ओकरापर तमसेलै आ कहलकै जे एकरा खुएबहीं की? कोनो बिलाड़िक सोक्षाँ एकरा दऽ आ गऽ।

मुदा डेढ़ बितना नै मानलक।

डेढ़ बितना एकटा फूटल घैल लऽ अनलक आ ओइमे हवा आबै लेल छोट–छोट भूर कऽ देलक आ ओइमे घास ओछा कऽ पौरकीकेँ राखि देलक, आ ओकरा दाना दैत रहल। जखन पौरकीक पएर ठीक भऽ गेलै तखन ओ बोनमे चलि गेल आ बुढ़ियाक कान्हपर बैसि गेल।

बुढ़िया ओइ गाए आ ओकर दुनू बच्चाक सेवा कऽ रहल छलि । एम्हर डेढ़ बितनाकेँ हेबऽ लगलै जे नै जानि ओइ गाएक की भेल हेतै। ओ बोन बिदा भेल, संयोगसँ ओइ बुढ़ियाक घरे लग ओ पहुँचल।

जखन ओ बोन पहुँचल तँ ओइ बुढ़ियाकेँ ओ पौरकी सभ गप कहलकै जे केना ओइ पौरकीक जान ओ बच्चा बचेने छल।

बुढ़िया लग बच्चा रातिमे रहल । भोरेमे बुढ़िया डेढ़ बितनाकेँ कहलकै जे बजारमे जा कऽ गाए बेच दिहें आ दुनू बच्चाकेँ राखि लिहँऽ। गाए बेचलासँ जतेक पाइ भेटौ ओइसँ लोहाक गाड़ी आ लोहाक हर कीनि लिहँऽ। फेर दुनू गाएक बच्चाकेँ गाड़ीमे जोति कऽ बिदा भऽ जइहँऽ।

डेढ़ बितना सएह केलक । जखन ओ गामपर पहुँचल तँ ढोलहो सुनलक जे राजाक कोनो एकटा खेत छै जकरा एक दिनमे तामि–कोड़ि कऽ तैयार करबाक छै, जँ कियो से कऽ देलकै तँ ओ जे मांगतै से इनाममे राजा देतै आ जँ ओ खेतकेँ एक दिनमे तैयार नै कऽ सकत तँ ओकरा छह मास जहलमे रहऽ पड़तै आ कोल्हू पेरऽ पड़तै।

राजा बड़ जुल्मी छल। सभसँ परती कोड़बा लै छल आ साँझ धरि खेत नै तैयार भेलापर ओकरा सजा दैत छल। मुदा डेढ़ बितना ओइ खेतकेँ लगभग पूरा जोति देलक। सांझ हेबामे अखनो देरी छलै । राजा तँ मोनसूबामे छल जे काजो

भऽ जाए आ इनामो नै देबऽ पड़ै। से ओ एकटा डाइनकेँ डेढ़ बितना लग पठेलक। डाइन डेढ़ बितनाकेँ खिस्सा सुना कऽ सुता देलक मुदा सांझ हेबासँ पहिनहिये डेढ़ बितना उठि गेल आ राजासँ ढेर रास इनाम लेलक।

¼4½
tgu djuh

एकटा कोनो गाम छलै । ओइ गाममे एकटा जोलहा कोनो तरहेँ गुजर करै छल। ओकरा एकटा बड्ड सुन्नर बेटी भेलै। ओ पैघ भेलि तँ ओकर बियाह एकटा गरीब जोलहासँ भऽ गेलै ।

बियाहक बाद ओ अपन वरकेँ कहलक जे एकटा चरखा आ कने तूर आनि दिअ।

ओकर पति जोगार कऽ कऽ चरखा आ तूर आनि देलकै। ओइसँ ओ खूब सुन्दर वस्त्र बनबऽ लागलि आ ओकर घरक गरीबी दूर भऽ गेलै।

एक बेर ओ खूब सुन्दर कालीन बनेलक, ओइमे देश आ देशक गाछ–चिड़ै–लोक आदि बनेलक आ वरकेँ कहलक जे एकरा राजाकेँ बेच आउ। राजा जँ दाम पूछए तँ कहबै जे कालीनक दाम कालीने बताएत।

जखन ओ रस्तामे छल तँ बनिजारा सभ ओइ कालीनकेँ चकित भऽ देखै आ दाम पूछै। जोलहा कहै जे कालीनक दाम कालीने बताएत।

रस्तामे राजाक मंत्री ओइ कालीनकेँ लाख स्वर्ण अशर्फीमे कीन लेलक आ कालीनकेँ राजा लग लऽ गेल। राजा अपन राज्यक चित्र देख कऽ आश्चर्यमे पड़ि गेल। ओ सोचलक जे

ओइ कालीन बनेनिहारिसँ बियाह करबाक चाही। ओ भेष बदलि कऽ जोलहाक गाम गेल, जोलहाक कनियाँकेँ देखि कऽ ओ दंग रहि गेल। जोलहाक कनियाँ दरबज्जा बन्द कऽ लेलक। राजा घुरि कऽ आएल आ मंत्रीकेँ कहलक– हमरा ओइ स्त्रीसँ बियाह करबाक अछि, जँ तौँ मदति करमे तँ हम तोरा इनाम देबौ आ नै करमे तँ फसरीपर झुला देबौ।

मंत्री चिन्तामे पड़ि गेल। ओ भोर–साँझ गंगा स्नान करै छल आ चिन्तामे मग्न रहै छल। एकटा गरेड़ी गंगा कातमे माल चरबैत छल। ओ मंत्रीकेँ चिन्तामग्न देखि कऽ ओकरासँ ऐ विषयमे पुछलक। मंत्रीक समस्या सुनलापर ओ कहलक जे जोलहाकेँ आदेश दियौ जे ओ राजाक पिताक समाचार स्वर्गसँ आनए।

मंत्री ई गप राजाकेँ कहलक। राजा जोलहाकेँ बजा कऽ ई आदेश देलक।

जोलहा अपन पत्नीसँ पुछलक तँ ओ जोलहाकेँ एकटा सोनाक औंठी आ बटखर्चा देलकै आ कहलकै जे राजाकेँ कहबै जे गबाही लेल मंत्रीकेँ सेहो संग पठाबए। ओ ईहो कहलक जे तकरा बाद औंठीकेँ गुड़का देबै आ जतए औंठी ठाढ़ भऽ जाए बुझब जे स्वर्ग आबि गेल। जोलहा सएह केलक।

राजा मंत्रीकेँ जोलहाक संग पठा देलकै आ जोलहा औंठी गुरका देलक।

औंठी एकटा बोनमे आबि ठाढ़ भऽ गेलै। ओतै जोलहा आ ओ मंत्री पनपियाइ केलक। तखन दुनू गोटे की देखैए जे एकटा बुढ़बा कटही गाड़ी घिचने जा रहल अछि आ दूत सभ ओकरा कोड़ा आ चाबुकसँ मारि रहल छै। मंत्री जोलहाकें कहलकै जे ई तँ स्वर्गीय राजा छथि। यमदूत सभकेँ जोलहा

कहलहै जे राजाक बदला मंत्रीजी गाड़ी घिचताह। यमदूत सभ मंत्रीकेँ कोड़ा मारैत कटही गाड़ीमे जोति देलक आ राजाकेँ छोड़ि देलक।

मंत्री घुरल। जोलहा राजासँ पुछलकै . अहाँक ई हाल कोना भेल तँ राजा कहलकै जेहन करनी तेहन फल। हमरा बेटाकेँ कहबै जे ओ प्रजासँ नीक व्यवहार करए। तकर बाद राजा दूत संगे चलि गेलाह। जोलहा आ मंत्री राजाकेँ सभ गप सुनेलकन्हि । राजा जोलहाक पत्नीकेँ बिसरि गेल आ प्रजासँ सेहो नीक व्यवहार करए लागल। जोलहा पत्नी संग खुशी–खुशी रहए लागल।

¼5½
pkfj cVkgh

चारि टा बटोही परदेस जा रहल छलाह। रस्तामे हुनका सभकेँ पियास लगलन्हि । ओ सभ सोचलन्हि जे जँ चारू गोटे जाएब तँ इनारपर पानि भरि रहल स्त्री पानि नै देत। से तीनू गोटे नुका कऽ बैसि गेलाह आ चारिम गोटे ओतऽ जा कऽ स्त्रीसँ पानि मांगलन्हि आ कहलन्हि जे पानि नै तँ कने काल लेल डोल दऽ दिअ, हम पानि अपनेसँ निकालि लेब।

स्त्री पुछलथिन्ह– अहाँ के छी?

. हम छी बटोही।

–बटोही तँ दुइए टा होइत अछि एकटा सूर्य आ दोसर चन्द्रमा। तूँ के छह? सत्य बाजह नै तँ एतै बैसि जाह।

ओ ओतै बैसि गेल।

फेर ओकर बाट ताकि कने कालक बाद दोसर बटोही आएल ।

–तों के छह ?

.हम छी कलामी ।

–कलामी तँ दुइए गोटे छथि–एक छथि धरती आ दोसर स्त्री।

ओहो ओतै बैस गेल।

फेर तेसर आएल।

–हम छी गरीब।

–गरीब तँ दुइए गोटे अछि, कहऽ के?

ओहो उत्तर नै दऽ सकल आ ओतै बैस गेल ।

फेर चारिम बटोही आएल, कहलक– हम छी मूर्ख ।

–मूर्ख तँ होइए दुइए टा। कहऽ के ?

ओहो उत्तर नै दऽ सकल आ ओतै बैस गेल।

फेर पानि भरि कऽ स्त्री चारूकेँ लऽ कऽ बिदा भेलि। ओ स्त्री नीक लोक छलि, कनी मजकिया धरि छलि। सोचने रहए जे गामपर जा कऽ ओकरा सभकेँ किछु खुआ कऽ, सभकेँ पानि पीबै लऽ देत।

एम्हर ओ स्त्री ओइ चारूकेँ लऽ कऽ बिदा भेलि ओम्हरसँ ओकर वर आबि रहल छलै। ओ अपन पत्नीक पाछाँ पछोर लागल चारिटा पुरुखकेँ देखि तामसे बिख भऽ गेल आ चारू बटोहीकेँ पीटऽ लागल। ओम्हरसँ राजाक सिपाही एलै आ पाँचूकेँ पकड़ि कऽ लऽ गेलै आ जहलमे बन्द कऽ देलकै।

स्त्री सेहो जहल पहुँचल आ सभटा खेरहा सिपाहीकेँ कहलकै।

सिपाही पुछलकै जे दूटा गरीब के अछि?

–बकरी आ छौड़ी।

–आ दूटा मूर्ख?

–हमरा पति आ अहाँ ।

तखन सिपाही पुछलक– अतिथि ककरा कहै छै?

.जकर ने अएबाक आ ने जएबाक तिथि होअए।

सिपाही खुशी भऽ गेल आ सभकेँ छोड़ि देलक।

¼6½

cfx;kd xkN

एकटा स्त्री रहथि। हुनका एकटा बेटा रहन्हि। ओकरा बगिया बड्ड नीक लागै छलै। एक बेर ओकरा मोनमे की हरेलै ने फुरेलै जे ओ एकटा बगिया अपन बाड़ीमे जा कऽ रोपि आएल। संयोगक गप एहन जे ओइमे सँ किछु दिनुका बाद एकटा गाछ बहार भऽ गेलै। आ देखिते–देखिते ओ एकटा बड़का बगियाक गाछ बनि गेलै ।

ओ बच्चा जखन–तखन ओइ गाछपर चढ़ि जाइ छल आ बगिया खाइत रहैत छल। एक दिन एकटा डैनियाही बुढ़िया ओतएसँ जा रहल छलि। ओ मनुक्खक माउस खाइत छलि। ओ बुढ़िया ऐ बच्चाकेँ बगियाक गाछपर चढ़ल देखलक तँ ओकर मोन लुसफुसा गेलै। ओ कोनो ब्योंत धरबऽ लागल जे कोन विधिये ऐ बच्चाक माउस खाइ। ओ गाछ लग गेल आ बच्चासँ एकटा बगिया मांगलक। बच्चा एकटा बगिया तोड़ि कऽ ओकरा हाथमे देबऽ लागल।

बुढ़िया बाजलि– हाथसँ हम बगिया नै लेब, हथाइन भऽ जाएत।

बच्चा बाजल– तखन माथपर राखि दै छियौ।

बुढ़िया बाजलि. माथपर रखने मथाइन भऽ जाएत।

बच्चा बाजल– तखन खोंइछमे धऽ दै छियौ।

बुढ़िया बाजलि. खोंइछमे रखने खोंछाइन भऽ जाएत। अहाँ एना करू जे निहुरि कऽ ऐ बोरामे एकटा बगिया धऽ दिअ।

बच्चाक आब माथ घुमलै । ओ बाजल . नै गै बुढ़िया, तूँ हमरा बोरामे कसि लेमे ।

मुदा डैनियाही बुढ़िया छल ठग्गिन बुढ़िया। ओ जेना तेना बच्चाकेँ पोल्हा लेलक। बच्चा ओकर गपमे आबि गेल आ जखने ओ निहुरि कऽ बगिया बोरामे राखऽ लागल, बुढ़िया ओकरा बोरामे बन्द कऽ लेलक आ बोरा माथपर लऽ कऽ बिदा भऽ गेलि। रस्तामे जाइत–जाइत ओ सुस्ताबै लेल एकटा गाछक नीचाँमे बोरा राखि देलक आ गाछपर ओंगठि कऽ बैसि गेलि। कने कालक बाद ओकरा ओंघी लागए लगलै आ ओ सूति गेलि।

एम्हर ओ बच्चा बोरा खोलि लेलक आ ओइमे काँट–कूस, आँकड़–पाथर आ थाल–कादो भरि देलक आ बोरा ओहिना बान्हि कऽ पड़ा गेल।

बुढ़ियाक निन्न कनी कालक बाद खुजलै। ओकरा एको रत्ती शंका नै भेलै आ ओ बोरा माथपर लऽ कऽ झटकारि कऽ बिदा भेलि।

ओकरा बोरा कनेक बेसी भारी बुझेलै। ओ मोने–मोन प्रसन्न भेलि जे खूब हृष्ट–पुष्ट बच्चा अछि, एकर मसुआइ खाइमे बड्ड नीक लागत। ओ बुढ़िया कनेक आर आगाँ बढ़ल तँ थाल–कादोसँ कनेक पानि चूलै। ओ बुढ़िया मोने मोन गुम्हरल– बाउ, हमर माथपर लगही कऽ रहल छी? आइ चलू ने गामपर, अहाँकेँ काटि–बना कऽ मसुआइ खाएब।

बुढ़िया कने आर आगाँ गेलि तँ ओकरा काँट–कूस गड़ऽ लगलै। ओकरा लगलै जे ई छौंड़ा बिड्डू काटि रहल अछि।

ओ मोने–मोन कहलक– काट ने बाउ कतेक बिड्डू काटै छैँ, आइ तँ गामपर जा कऽ तोहर मसुआइ खेबे करबौ ।

ओइ बुढ़ियाक एकटा बेटी छलै। जखन ओ गामपर पहुँचल तँ बेटी पुछलकै– की अनने छैँ माए बोरामे।

बुढ़िया कहलकै– एकटा छौड़ाकेँ अनने छी। बोरा खोलि कऽ ओकरा निकाल आ ओकर मसुआइ बना।

मुदा जखन बेटी ओइ बोराकेँ खोललक तँ आहि रे ब्बा। बुढ़िया बिखसँ सबिख भऽ गेलि।

किछु दिनुका बाद ओ भेष बदलि कऽ ओइ बगियाक गाछ लग फेर गेल। ओ बच्चा ओइ गाछपर बैसि कऽ बगिया खाइत छल। बुढ़िया ओइ बच्चासँ बगिया मांगलक तँ बच्चा ओकरा दिस देखलक। बुढ़िया भेष बदलने छल तैँ ओ ओकरा चीन्हि नै सकल। बच्चा एकटा बगिया तोड़ि कऽ बुढ़ियाक हाथमे देबऽ चाहलक।

बुढ़िया बाजलि– हाथमे लेब तँ हथाइन भऽ जाएत।

बच्चा बाजल. गै, तूहीं छें ठगिनी बुढ़िया।

बुढ़िया बाजलि– नै बाबू हम नै छी, अहाँकेँ धोखा होइए।

–तखन तूँ कहमे जे माथपर लेब तँ मथाइन भऽ जाएत, खोंइछमे लेब तँ खोंछाइन भऽ जाएत?–बच्चा पुछलक।

बुढ़िया बाजलि– हँ, से तँ सभ कहत जे से भऽ जाएत। तैं ने हम ई बोरा अनने छी। ऐमे दऽ दिअ।

बच्चा बुढ़ियाकेँ नीक जकाँ देखलक। बुढिया भेष बदलने छलि से आब ओकरा विश्वास भऽ गेलै जे ई ठग्गिन बुढ़िया नै अछि कोनो दोसर बुढ़िया अछि।

ओ बच्चा बुढ़ियाक बोरामे बगिया देबा लेल निहुरल।

मुदा तखने ओ बुढ़िया ओकरा नीचाँ घीचि लेलकै आ बोरामे कसि लेलकै। ऐ बेर ओ रस्तामे कतौ ठाढ़ नै भेलि। सोझे गामपर पहुँचि बोरा नीचाँमे राखलक, बेटीकेँ ओइ बच्चाक मसुआइ बनबै लेल कहलक आ अपन नुआ लऽ कऽ पोखरि नहाइ–सोनाइ लेल बिदा भेलि।

ओकर बेटी जे बोरा खोलैए तँ देखैए जे बड़का–बड़का केशबला एकटा सुन्दर बच्चा ओतए अछि। ओ बच्चासँ पुछलक जे ओकर केश एतेक पैघ पैघ आ घनगर कोना छै।

आब बच्चाकेँ अपन जान बचबाक आस जगलै।

ओ बाजल– हमर माए हमरा सभ दिन भोरमे उक्खड़िमे माथ राखि समाठसँ कूटैए। तहीसँ हमर ई केश एते पैघ भऽ गेल अछि आ घनगर सेहो।

आब बुढ़ियाक बेटी ओइ बच्चाकेँ कहलकै– हमरो माथ ओहिना कऽ कूटि दे।

बच्चा ओकर माथ उक्खड़िमे दऽ देलक आ समाठक प्रहारसँ ओकरा मारि देलक। फेर ओ बच्चा बुढ़ियाक बेटीक कपड़ा पहीर लेलक आ ओकर मसुआइ रान्हलक। आ बुढ़िया जखन एलै तखन ओइ मसुआइकेँ बुढ़ियाक सोझाँ पड़सि देलक।

जखने बुढ़िया मसुआइ खाइ लेल बैसल तखने एकटा बिलाड़ि बाजि उठल– "म्याऊँ म्याऊँ, अपने धीया अपने खाऊँ, म्याऊँ म्याऊँ"।

बुढ़िया बाजलि– गै, एकरो कने माउस दऽ दहीं, नै तँ ई अहिना बजैत रहतौ।

बुढ़ियाक बेटीक भेषमे ओ बच्चा बिलाड़िक आगाँ माउस पड़सि देलक मुदा बिलाड़ि माउस तँ नहिये खेलक ओहिना बजैत रहल। आब बुढ़ियाकेँ शंका भेलै। ओ ओइ बच्चा दिस देखलक तँ ओ बच्चा चोट्टे ओकरो समाठक प्रहारसँ मारि देलक आ घर घुरि गेल।

१. मोतीसायर

मिथिलाक मोरंगक राजा भीमसेनकँ संतान नञि छलन्हि, से ओ यज्ञ केलन्हि।



यज्ञक प्रतापसँ हुनका एकटा बेटी भेलन्हि। राजा ओकर नाम मोतीसायर राखलन्हि।



फेर मोतीसायर पैघ भऽ गेलीह। राजा ओकर कुण्डली बनबओलन्हि। मुदा कुण्डली बनओनिहार ब्राह्मण मोतीसायरक अद्‌भुत भाग्य देखि ओकरासँ विवाह करबाक प्रण कएलक।

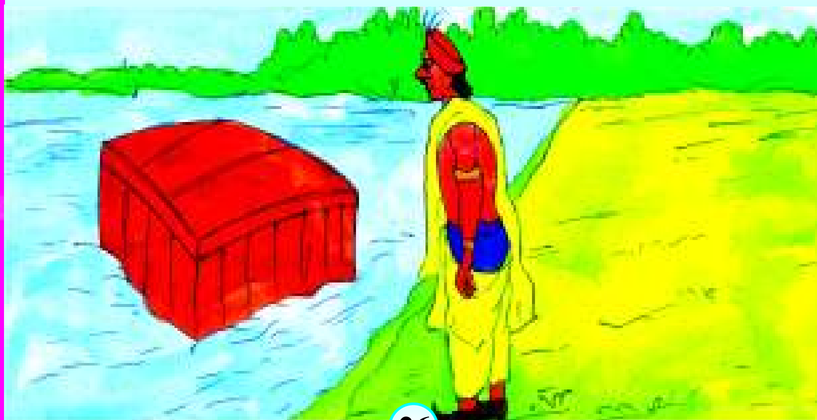


से ओ राजाकेँ कहलक-

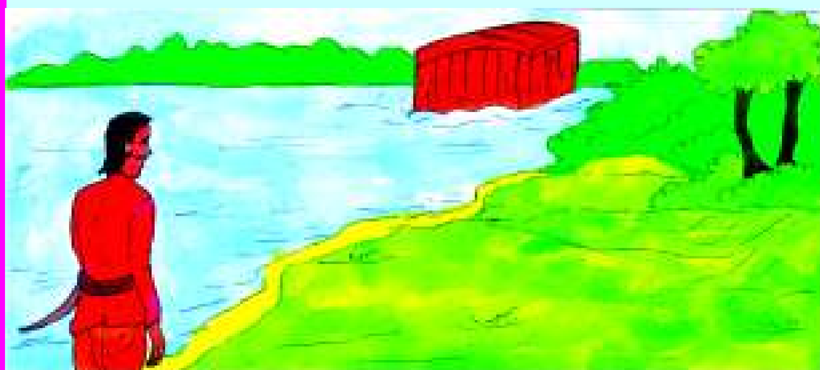




राजा मोतीसायरकेँ संदूकमे बन्न कऽ बहा देलक।



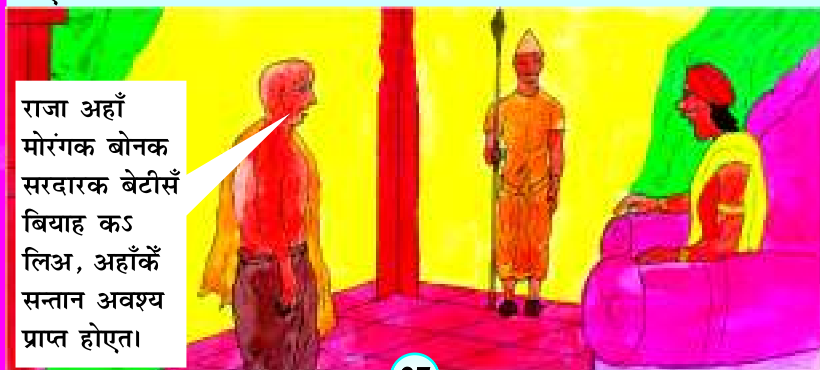
ओ संदूक बहैत-बहैत मोरंगक बोन लग पहुँचल आ ओतुक्का सरदार, जकरा संतान नञि छलै, ओहि संदूककेँ देखलक।



ओहि सरदारक नाम गवल रहै। ओ संदूकसँ मोतीसायरकेँ निकालि ओकरा बेटी बना घर लऽ गेल।



ब्राह्मणकेँ एहि गपक जानकारी भऽ गेलै। ओ राजाकेँ गवलक बेटीसँ बियाह करबऽ चाहलक, जाहिसँ बियाहक बाद राजा लाजे जहर-माहुर खा लिऐ आ ओ राजा बनि जाए।



ब्राह्मण सोचलक-

आब राजा अपन बेटीसँ बियाह करत आ चाहे तँ ओ आत्महत्या कऽ लेत वा प्रजा ओकरा गद्दीसँ हटा देतै आ हम बनि जाएब राजा।



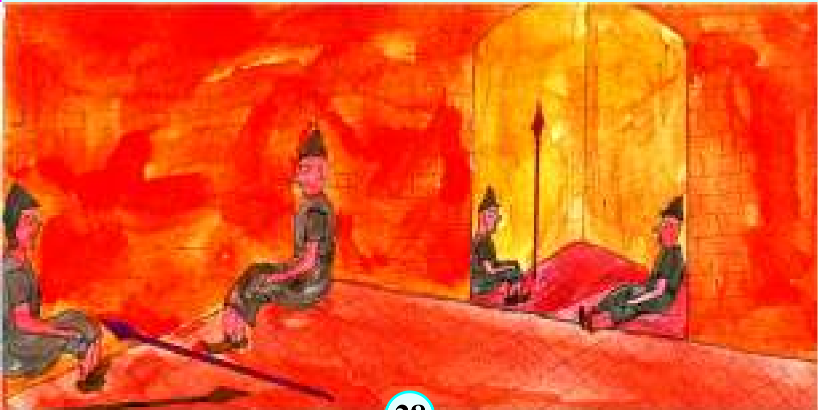
राजा मोरंगक बोन युद्ध करऽ गेल, मुदा गवल राजाकेँ हरा देलकै, मुदा हरा कऽ बकसि देलकै।



राजा घुरि कऽ राज्य अएलाह आ यादवक प्रतापी सरदार लोकदेव कृष्णारामकेँ बजेलन्हि।



कृष्णाराम गवलक किलामे मरछाउर छिटवा देलन्हि। सभ पहरेदार बेहोश भऽ गेल।



कृष्णाराम मोतीसायरकेँ लऽ राजा लग अएलाह। राजा कृष्णारामकेँ अदहा मोरंग दऽ देलन्हि। कृष्णाराम घुरि गेलाह।



राजा सन्तान प्राप्ति लेल आन्हर छलाह से ओ अपन बेटीकेँ नञि चीन्हि सकलाह आ ओकरासँ बियाह करऽ चाहलन्हि। मोतीसायर हुनका स्राप देलन्हि आ बिला गेलीह।



मोतीसायरकेँ मोक्ष भेटलन्हि आ भीमसेन आ ओकर राज्य नष्ट भऽ गेल।

२. गांगोदेवी

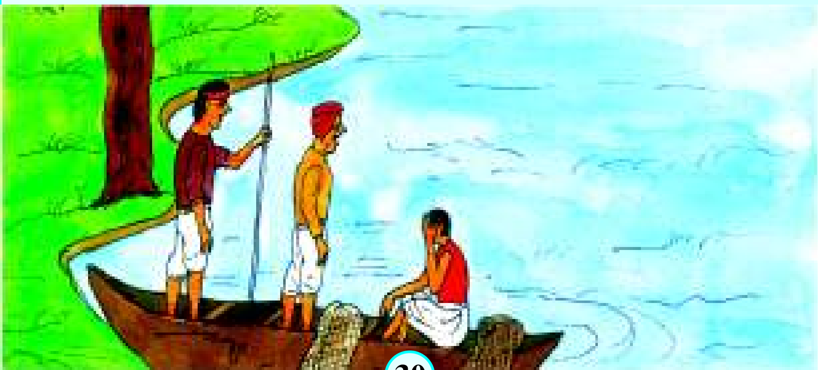
एकटा मलाह परिवार मिथिलाक, गांगोदेवीक पति, भैंसुर आ ससुर माछ मारैले गेलाह, मुदा जालमे एक्कोटा माँछ नञि ।



फेर जाल फेकलन्हि। मुदा वएह गप।



धारमे लागैए माछ नञि छैक। की कोना होएत।



ठीक छै, ई आखिरी बेर जाल फेकै छी।



मुदा आश्चर्य! जालमे माँछ भरि गेलै।



नाह माँछसँ भरि गेलै।



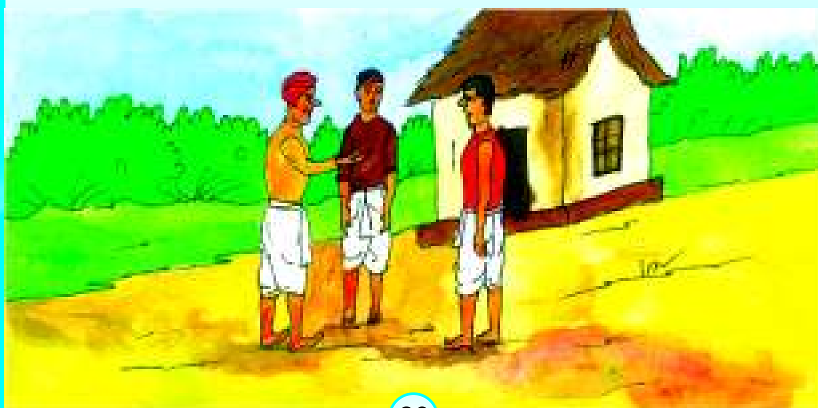
तीनू गोटे माँछ बेचि अएलाह।



चूड़ी-साड़ी लऽ कऽ गांगोकेँ देलन्हि।



फेर गांगोदेवीक भगताक विषयमे आस्ते-आस्ते सभकेँ जानकारी भेलै।



एखनो मिथिलामे मलाह लोकनि आ दोसरो लोकसभ गांगोदेवीक नाम लऽ कऽ जाल फेकै छथि। आ हुनकर जाल माँछसँ भरि जाइत अछि।



३. लालबन बाबा

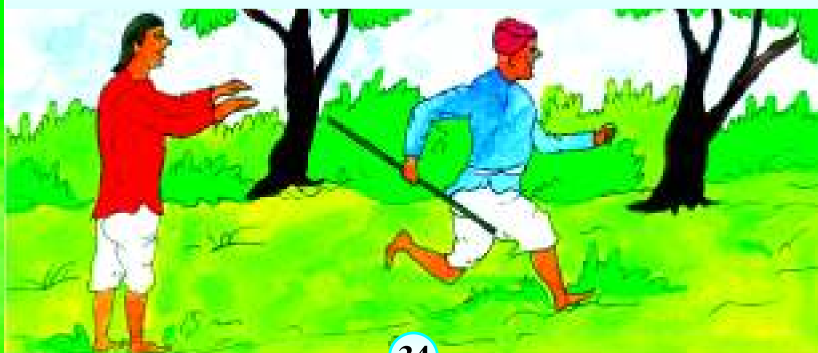
लालबन आ मनसाराम। चर्मकार जातिक। महीस पोसैत छलाह, संगे-संग महीस चरबैले जाइत छलाह नौहट्टाक बोनक बगलक चौरीमे।



एक दिन महीसकेँ बाघिन घेरि लेलकै।



लालबन ओकरा बचबैले दौगलाह।



बाघिन लग लालबन पहुँचलाह।



युद्ध भेल। लालबन वीर छलाह, हथियार राखि हाथसँ युद्ध केलन्हि मुदा हारऽ लगलाह।



मनसाराम महीस लऽ घुरि अएलाह, मुदा लाज आ भयसँ एहि घटनाक चर्च ओ नञि केलन्हि



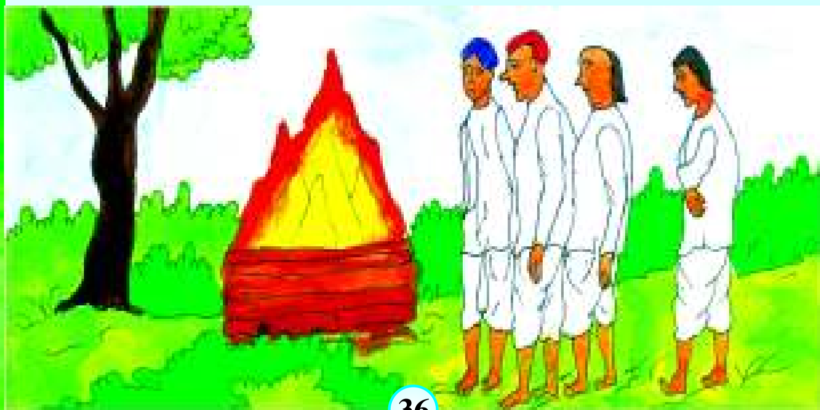
लालबनक आत्माकेँ कष्ट भेलै। ओ मनसारामकेँ एहि लेल मृत्युदंड देलक।



लालबनक आत्मा गाममे सभकेँ लालबनक लहाशक स्थलक सूचना देलक।



गौआँ सभ हुनकर संस्कार केलन्हि।



एखनो भगताक गोहारि सुनि लालबनक आत्मा भगताक शरीरमे अबैत छथि आ लोकक मनोकामना पुरैत छथि।





४. गरीबन बाबा

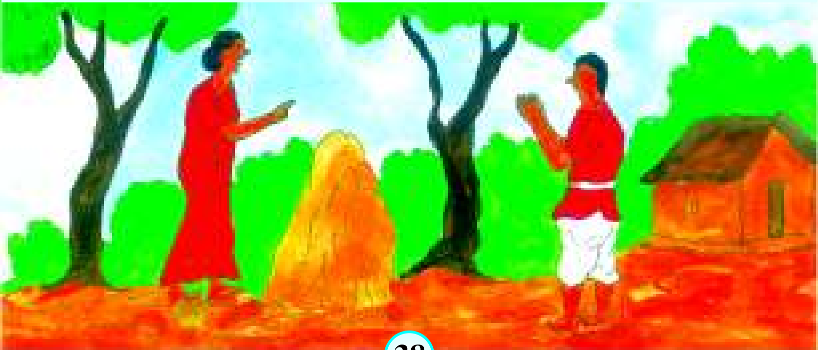
कमला कातमे उघरा गाम, ओतहि रहै छलाह तीनटा पहलमान-रजक गरीबन, यादव घासी आ ब्राह्मण बरहम ठाकुर।



तीनू अखराहाक पहलमान। एक दिन अखराहा लग कमलाक पीड़ीमे गरीबनक पएर धोखासँ भीरि गेलन्हि।



कमला महरानी एहि गपपर गरीबनपर तामसे बिक्ख भऽ गेलीह।



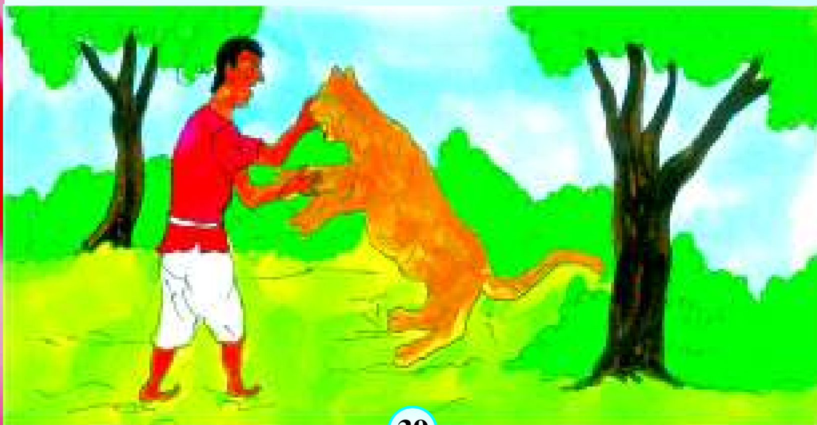
इन्द्रसँ अपन दुखड़ा सुनेलन्हि कमला।



इन्द्र एकटा बाघिनकेँ कमलाक संग कऽ देलन्हि।



ओहि बाघिन संगे गरीबनक युद्ध भेलन्हि।



गरीबन मारल गेलाह।



कियो हुनकर लहाशकेँ कमलामे बहा देलकन्हि । आ हुनकर लहाश धोबियाघाटपर लागि गेलन्हि। मुदा ओ धोबी हुनकर लहाशकेँ सहटारि कऽ फेर धारमे दऽ देलक।



गरीबनक पत्नीक गोहारि भगवान सुनलन्हि।



गरीबनक आत्मा एकटा जिबैत लोकक शरीरमे आबि गेल।



ओ आत्मा लोकसभकेँ कहलक-



सभ सएह केलन्हि आ गरीबनक प्रभावसँ गरम भट्ठीमे सभटा वस्त्र सुरक्षित रहैत अछि।



५. बिहुला

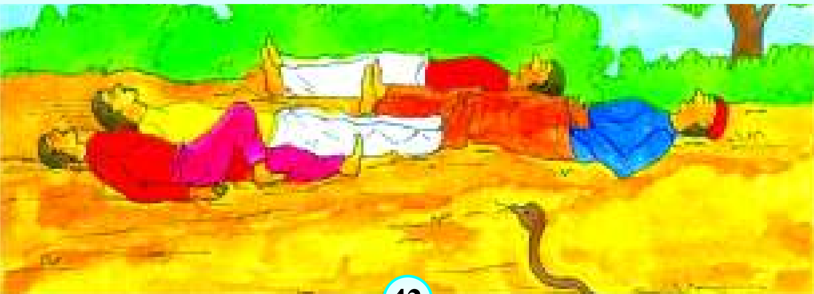
चम्पानगरमे रहै छल शिवभक्त चाँदू वणिक।



शिवक नगरी कैलाशसँ मनसा विषहरा चम्पानगर अएलीह आ चाँदकेँ अपन भक्त बनबए चाहलन्हि। मुदा ओ छल भोलाबाबाक भक्त, मना कऽ देलक।



मनसा तमसा गेलीह, अपन असली रूपमे आबि एम्हर-ओम्हर जतए कतहु चाँदक बेटा भेटलन्हि तकरा काटि कऽ मारि देलन्हि, ओकर व्यापार खतम कऽ देलन्हि, जहाज डुमा देलन्हि।



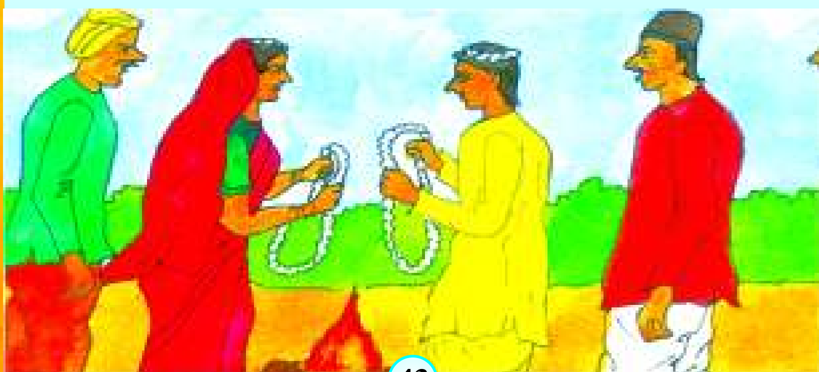
दरिद्र चाँद वणिकक घरमे ओहि बिपतिमे एकटा पुत्रक जन्म भेलै, नाम राखल गेलै लखिन्दर।



लखिन्दर बढ़ऽ लागल।



चाँद वणिककेँ मनसा देवीक स्वप्न अएलै जे ओ लखिन्दरकेँ कोबर घरमे काटि लेतीह। से चाँद लखिन्दरक बियाह अखण्ड सौभाग्यवती बिहुलासँ करबेलन्हि।



चाँद घरमे पातर जाली लगबेलन्हि जे विषहारा घरमे नञि पैसथि, मुदा मनसा ओहू पातर जालीसँ पैसि गेलीह आ लखिन्दर कें काटि कऽ प्राण हरि लेलन्हि।



बिहुला पतिकेँ लऽ केराक थम्हपर धारमे बहि गेलीह।



धार हुनका प्रयागक त्रिवेणी घाटपर लऽ अनलकन्हि।



ओहि घाटपर एकटा धोबिन अबैत छलीह जे अपन बच्चाकेँ मारि कऽ घाटपर राखि दैत छलीह।



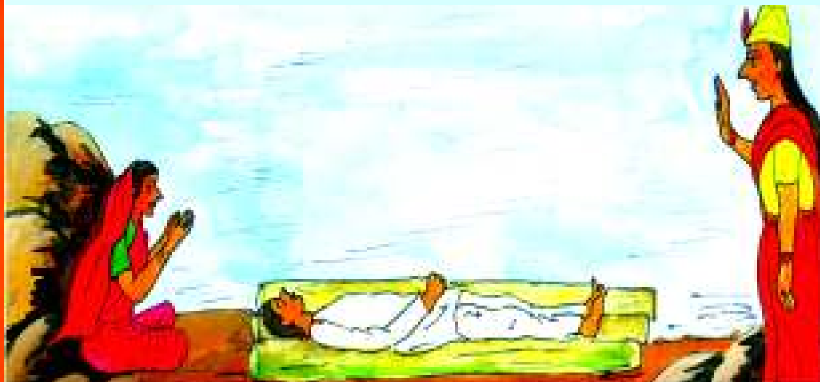
फेर अपन कपड़ा धो-पखारि-बान्हि घुरती काल बेटाकेँ जिआ कऽ लऽ जाइत छलीह।



बिहुलाकेँ ओ धोबिन कहलखिन्ह जे मनसाक आराधनासँ ओ मृतककेँ जीवित करबामे सक्षम भेल छथि।



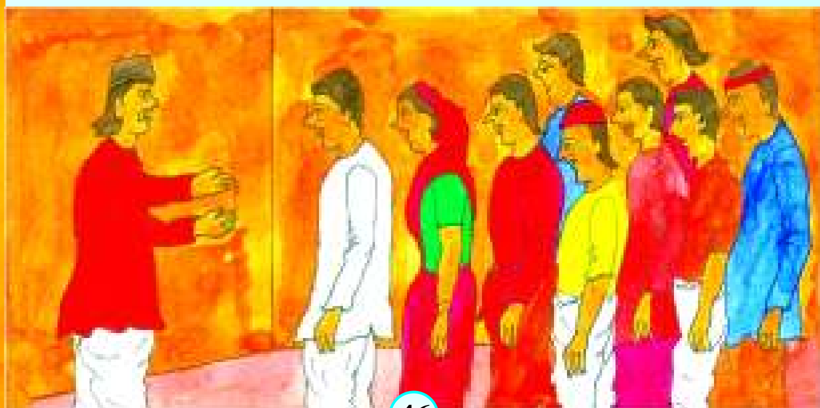
बिहुला मनसाक आराधना कएलन्हि। मनसा प्रसन्न भऽ आशीर्वाद देलन्हि जे लखिन्दर आ ओकर सातो भाँइ जीबि जेताह।



सएह भेल। लखिन्दर उठि कऽ बैसि गेलाह।



बिहुला अपन पति आ सातू भैसुर संगे ससुर लग आबि गेलीह।



६. सीता आ सुग्गा

सीरध्वज जनकक राज्यक बसन्त ऋतु।



सीता अपन सखी संग घूमि रहल छलीह।



सीता झूला झुलैत आ सखी सभ झुलबैत, सभ गीत गबैत।



तखने सीताजी सोझाँमे एकटा जोड़ा सुग्गा देखलन्हि, वर आ कनियाँ। कनियाँ वएह गीत गबैत जे सीता अपन सखी संग गाबि रहल छलीह।



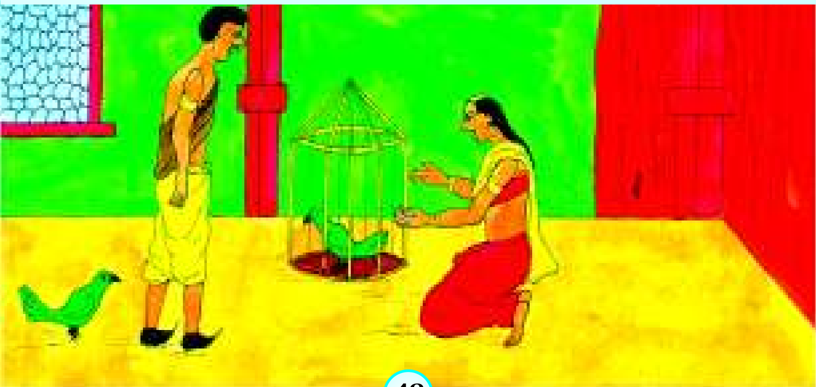
सीता महलमे अपन सेवकसँ ओहि सुग्गाकेँ पकड़ि कऽ अनबा लेल कहलन्हि।



ओ सुग्गाक उद्यान गेल।



सेवक सुग्गाक कनियाँकेँ पकड़ि कऽ सोनाक पिंजरा मे बन्न कऽ सीताजीकेँ देलक। सुग्गाक पति सेहो पत्नीक पाछाँ ओतए आबि गेल।



सुग्गा सीताजीकेँ कहलक-



सीता ओकर गपपर ध्यान नञि देलन्हि।



सीता तैयो ध्यान नञि देलन्हि।



७. सीता, गाए आ खिखिर

दशरथक पिण्डदान लेल राम, लक्ष्मण आ सीता गया गेलथि।



पिण्डदानक लेल आर किछु सामग्री अनबा लेल राम आ लक्ष्मण बिदा भेलाह, सीताकेँ प्रेतशिला पहाड़ लग बाट ताकैले कहि कऽ।



प्रेतशिला लग पुरखाक दर्शन होइ छै। दशरथ ओतए आबि गेलाह।



सीता अपन हाथक फल दशरथकेँ दऽ देलखिन्ह। खिखिर आ गाए साक्षी रहथि।



राम लक्ष्मणक अएलापर सीता ई गप हुनका सभसँ कहलखिन्ह। सीतासँ प्रमाण माँगल गेल।



सीता गाए आ खिखिर दिस घुरि बजलीह-



गाए चुप रहलि। गाए आ खिखिर एहि लोभमे रहथि जे फेरसँ पिण्डदान होएत तँ खएबा लेल आर भेटत।



मुदा एकटा धोबिन जे अढ़मे छलीह से आबि कऽ रामकेँ सत्यक जनतब देलन्हि आ खिखिर आ गाएपर तमसेलथि। रामकेँ सन्तोख भेलन्हि।



सीता धोबिनकेँ आशीर्वाद देलन्हि आ गाए ओ खिखिरकेँ स्राप।



गाए अहाँकेँ स्राप अछि जे अहाँ ऐंठ-कुइठ खा कऽ जीब आ हे खिखिर, अहाँकेँ स्राप अछि जे भरि दिन अहाँ बिल बनाएब मुदा रातिमे जे पैसबाक प्रयास करब तँ अहाँक पुच्छी मोट भऽ जाएत आ अहाँ भरि राति घरमे नहि रहि सकब।



८. अयाची मिश्र आ शंकर मिश्र

नैय्यायिक भवनाथ मिश्र मिथिलाक सरिसव ग्राममे बिना पाइ लेने विद्या देथि। ओ कहियो ककरोसँ किछु नञि मँगलन्हि, से हुनकर नाम पड़ि गेल अयाची मिश्र।



अपन बाड़ीमे जे उपजन्हि ताहिसँ हुनकर गुजर चलन्हि।



मिथिला नरेश शिवसिंहसँ सेहो कोनो सहायता लेब ओ स्वीकार नहि केलन्हि।



अयाची मिश्र आ हुनकर पत्नी भवानीक बेटा शंकर मिश्र छलखिन्ह। भवानी अपन बेटाकेँ पैघ भेलापर कहलखिन्ह जे हम अहाँक जनमपर चमैनकेँ गछने छिऐक जे अहाँक पहिल कमाइ ओकरा भेटतैक।



ओ चमैन सेहो शंकर मिश्रकेँ बड्ड मानै छलखिन्ह।



एक दिन मिथिला नरेश शिवसिंहक रथ सरिसवसँ जा रहल छल।



शिवसिंह शंकर मिश्रकेँ देखलन्हि।



शिवसिंह रथसँ उतरि ओहि बालक लग पहुँचलाह तँ पता लगलन्हि जे ओ बालक भवनाथ मिश्रक पुत्र छथि।

राजाकेँ उत्कण्ठा भेलन्हि-

बालक, अहाँसँ एकटा श्लोक सुनबाक इच्छा अछि, स्वरचित नहि तँ दोसरेक रचित सुनाऊ।

बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जग त्रयम्।।

राजा आश्चर्यमे पड़ि गेलाह-



राजा मंत्रीकेँ कहलन्हि-



शंकर मिश्र दू बाकुट सोनाक अशर्फी खजानासँ लेलन्हि।



आ गामपर माएकेँ दऽ देलखिन्ह।



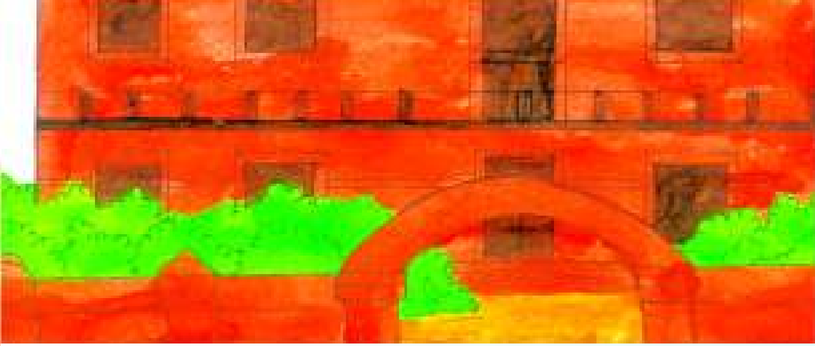
आ माए ओ सभटा अशर्फी ओहि चमैनकेँ दऽ देलखिन्ह।



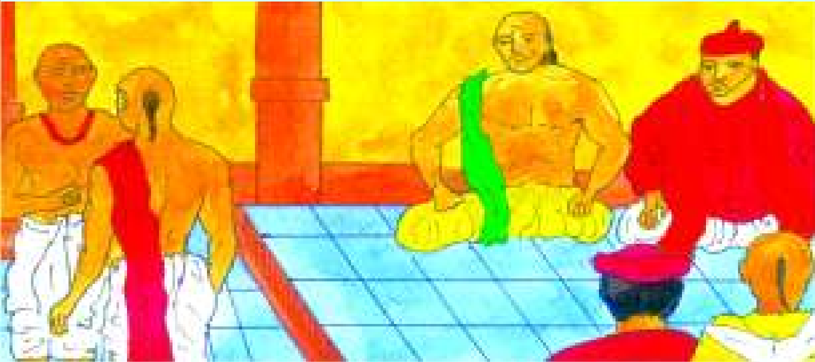
ओ चमैन ओहि अशर्फीसँ सरिसवमे एकटा पोखरि खुनबेलन्हि, ओ पोखरि आइयो चमैनिया पोखरिक नामसँ गाममे विद्यमान अछि।

९. पक्षधर मिश्र

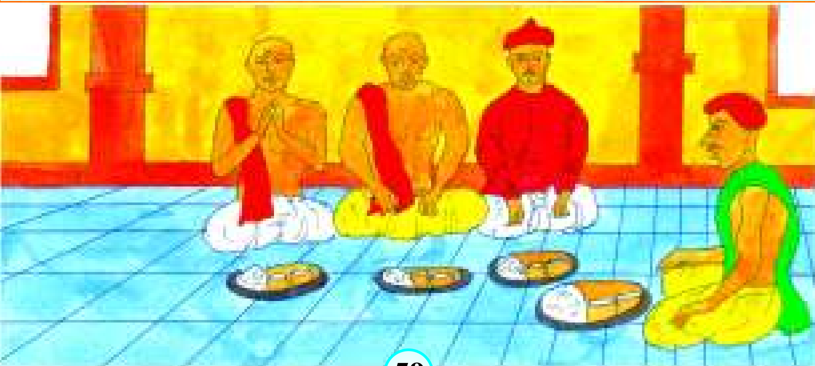
विद्यापति अपन गाम बिस्फीमे एकटा धर्मशाला बनबेने रहथि।



एक दिन ओ धर्मशाला पहुँचलाह, सभक समाचार पुछलखिन्ह।



भोजनपर सभ बैसै गेलाह।



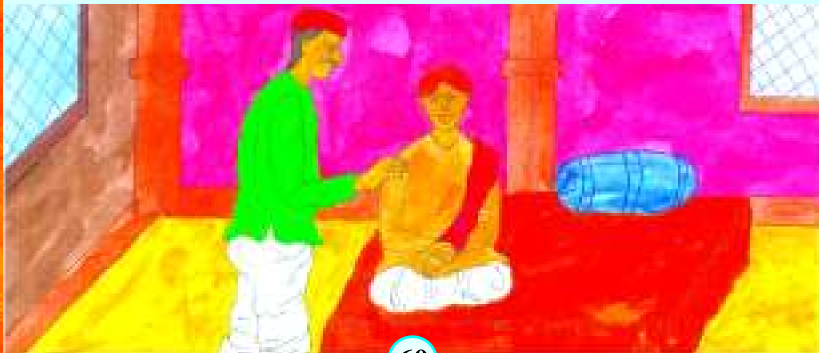
फेर सभ आराम करैले जाइ गेलाह।



तखने विद्यापति एक गोटेकेँ देखलन्हि जे भोजनमे छुटि गेल छलाह।



विद्यापति हुनका चीन्हि गेलाह। ई तँ जयदेव मिश्र छथि, हमर गुरूभाइ। आब हिनकर नाम पक्षधर मिश्र पड़ि गेल छलन्हि, तेहन तर्कपूर्ण गप करै छलाह, ताहि कारणसँ। हुनके कक्का हरिमिश्र तँ विद्यापतिक गुरू छलाह। हुनका घर लऽ गेलाह विद्यापति।



१०. उगना

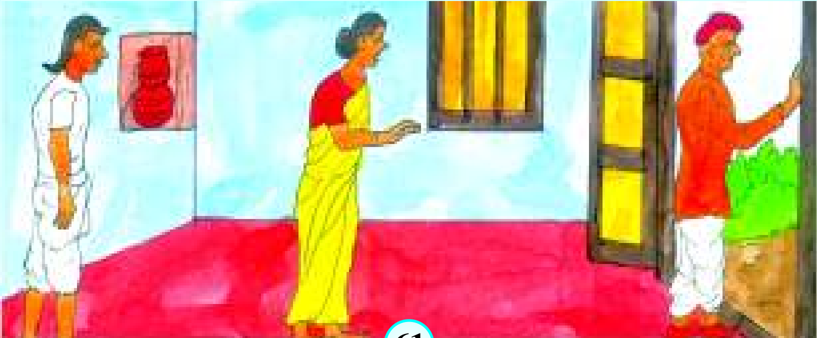
विद्यापति बड़का भारी शिवभक्त।



शिव विद्यापतिक गीत सुनि कैलाशमे नाचऽ लागथि। एक दिन ओ नोकर बनि उगना नाम राखि विद्यापति लग आबि गेलाह।



विद्यापतिकेँ एक बेर कतौ दूर देश जएबाक छलन्हि। पत्नी चानन हुनका उगनाकेँ संग लऽ जएबा लेल कहलखिन्ह।



रस्तामे विद्यापतिकेँ पियास लगलन्हि।



उगना चारू दिस घुरि अएलाह, पानि कतहु नञि भेटलन्हि।



विद्यापति पियासे मूर्च्छित भऽ रहल छलाह।



तखने उगना हुनका पानि देलखिन्ह।



विद्यापति पानि पीबि कहलखिन्ह-



तखने विद्यापति उगनाक भीजल माथ देखलन्हि। आ बूझि गेलाह जे ओ शिवक जटासँ निकलल गंगाजल पीलनि अछि।



शिव हुनका दर्शन देलखिन्ह-



शिव विद्यापतिकें ठाढ़ केलन्हि।



ओम्हर कैलाशमे पार्वती चिन्तित। एक दिन चानन उगनाकें तेतरि अनबा लेल कहलखिन्ह।



पार्वती सभटा तेतरि तोड़ि लेलन्हि। से उगना खाली हाथे पहुँचलाह। चाननक हाथमे बाढ़नि छलन्हि।



ओ बाढ़नि लऽ उगनापर दौगलीह।



मुदा उगना विलोपित भऽ गेलाह। हुनकर वियोगमे विद्यापति कएकटा गीत विक्षिप्त भऽ लिखलन्हि।



११. मीरां साहेब

डिलरीनगरमे एकटा सैयद छलाह। अपन कनियाँ आ बेटा सभक संग रहैत छलाह। सभ लड़ाका सभ।



नूनजागढ़क युद्ध।



मुदा एहि बेर भाग्य संगमे नहि छलन्हि। सैयद अपन सभटा बेटाक संग मारल गेलाह।



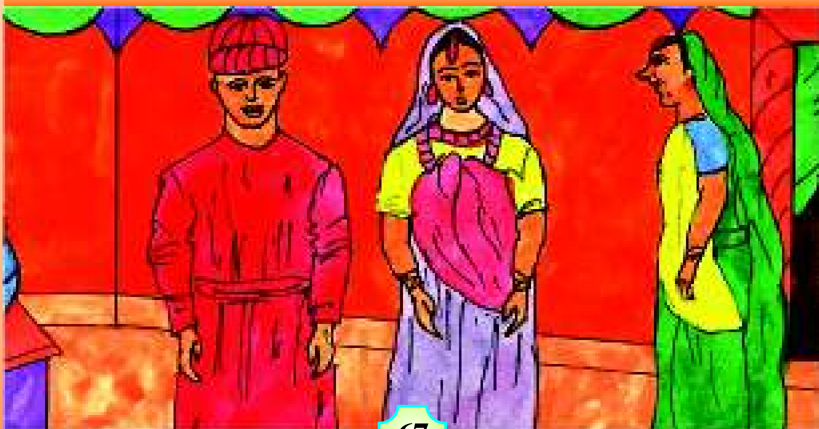
मुदा सैयदक पत्नी गर्भवती छलखिन्ह। हुनका बेटा भेलन्हि। नाम राखल गेलै मीरां।



मीरां पैघ भेल। मुदा ओहो लड़ाका निकलल।



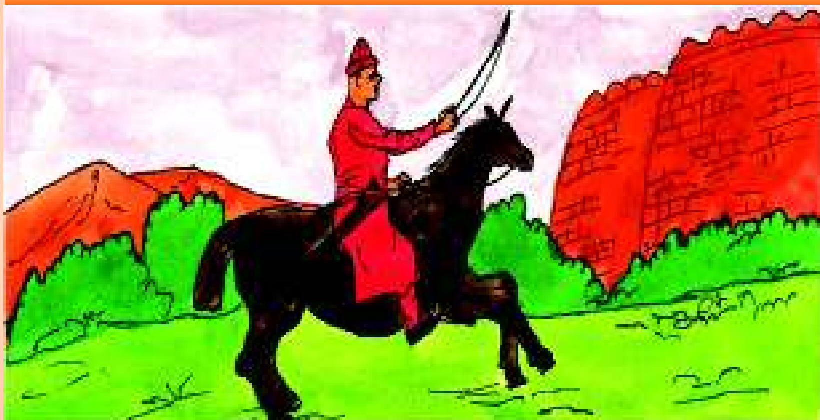
माए ओकर बियाह करबेलन्हि, ई सोचि जे युद्धसँ ध्यान हटतै।



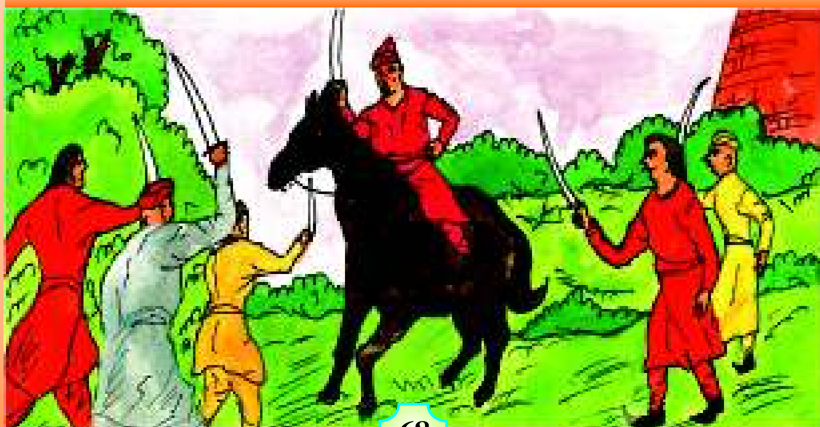
मुदा मीरां अपन बाप-भाएक बदला लेबाक लेल नूनजागढ़ जएबाक प्रण केलन्हि। माए आ पत्नी बड्ड बुझेलखिन्ह।



मीरां नूनजागढ़ बिदा भेलाह।



बाप-माएक बदला लेलन्हि मीरां नूनजागढ़ जा कऽ।



डिलरीनगर घुरि अएलाह मीरां। हुनकर मृत्युक बादो बहुत दिन धरि डिलरीनगरमे हुनक आत्माक प्रभावसँ शान्ति रहल।



१२. अमर बाबा

कमला धारक जन्म भेलन्हि आ किसान आ मलाह सभक जीवन आनन्दित भऽ गेल।



मुदा चमार जातिक सरदार बैदलाक मोनमे खोट आबि गेलै। ओ बरजोड़ी कमलासँ बियाह करए चाहलक।

मलाह लोकनिकेँ एहि गपक पता चललन्हि।



ओ सभ भोला बाबाक तपस्या करबाक संकल्प लेलन्हि।



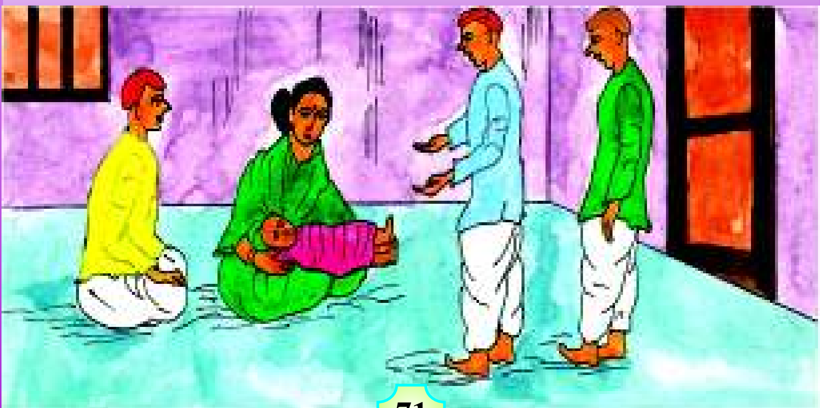
कमलाक सतीत्व बचाऊ महादेव--ई कहि सभ मलाह तपस्या शुरू केलन्हि।



भोलाबाबा प्रगट भेलाह।



सएह भेल।



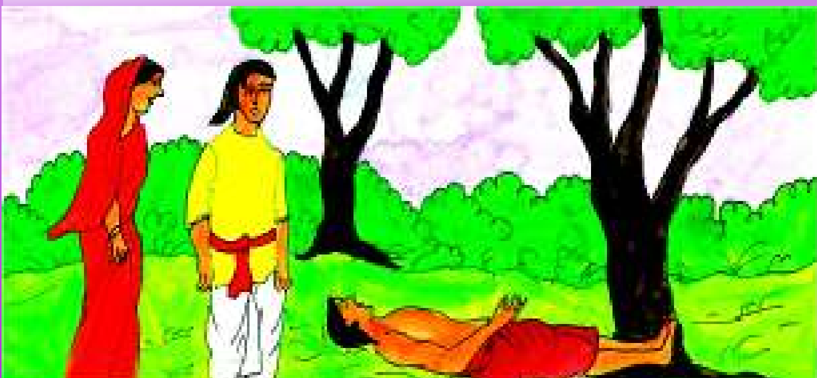
अमरसिंह पैघ भेलाह आ अखराहामे माटि देलन्हि बैदलाकेँ। युद्ध भेल आ बैदला मारल गेल।



बैदलाक कनियाँ सेहो मारलि गेलि मुदा तखने जनमल ओकर बेटा छल बड्ड बलगर। कमला अमरसिंहकेँ किछु भेद बतेलन्हि।



आ तखन अमरसिंह बैदलाक बेटाकेँ सेहो मारि देलन्हि।

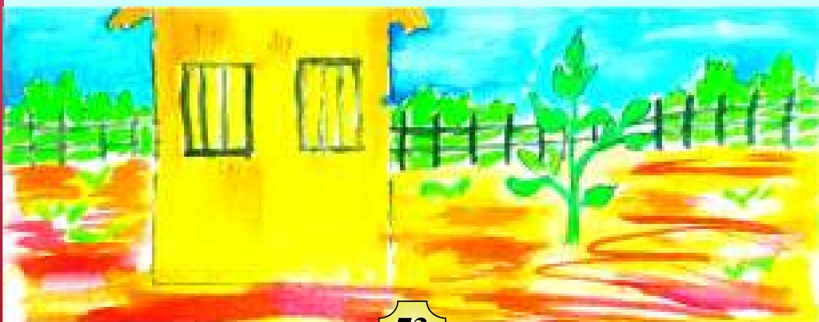


मलाह लोकनि कमलाक प्रति श्रद्धासँ तकैत अमर सिंहक गहमर बना कऽ आइयो पूजा करै छथि।

१३. बगियाक गाछ







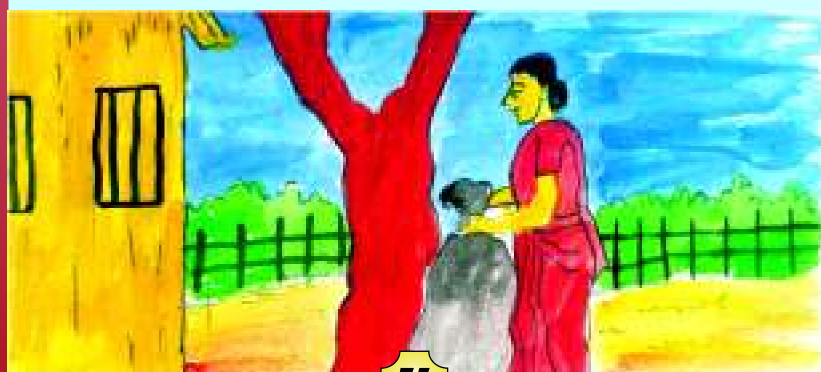


















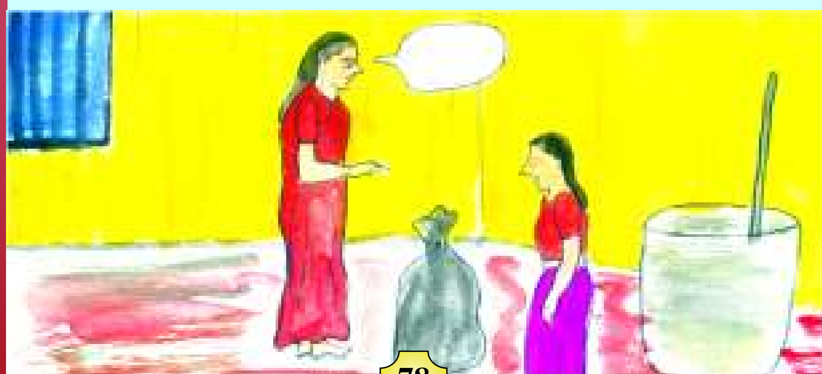


















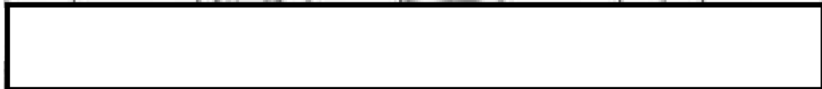






१४. सामा चकेबा









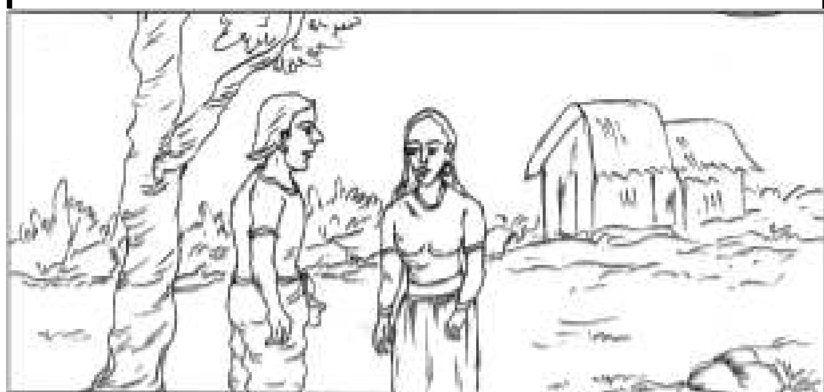


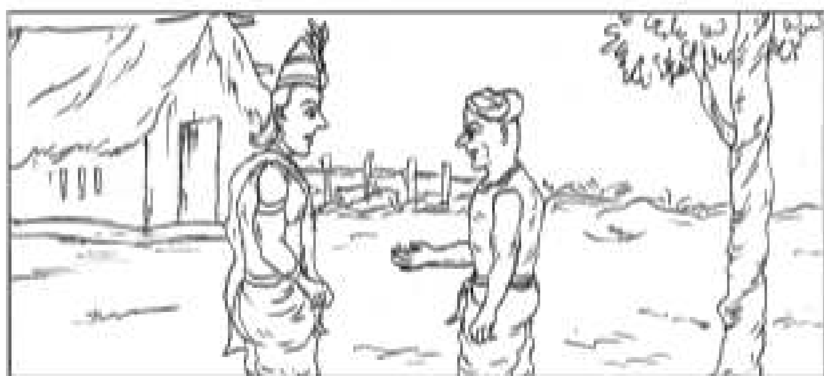


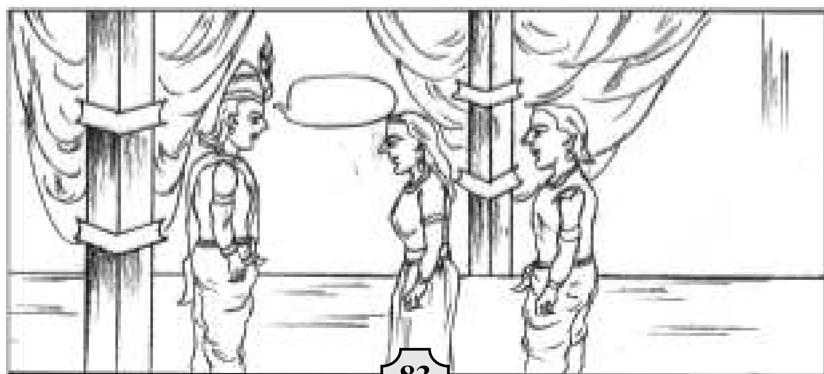


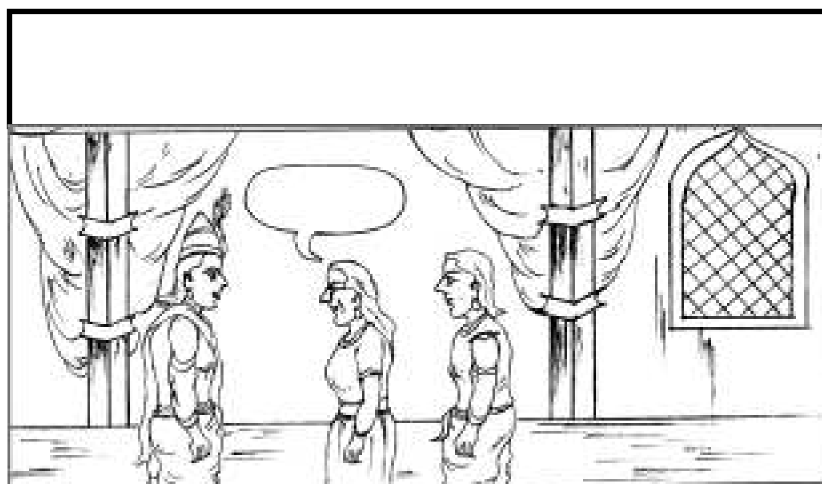








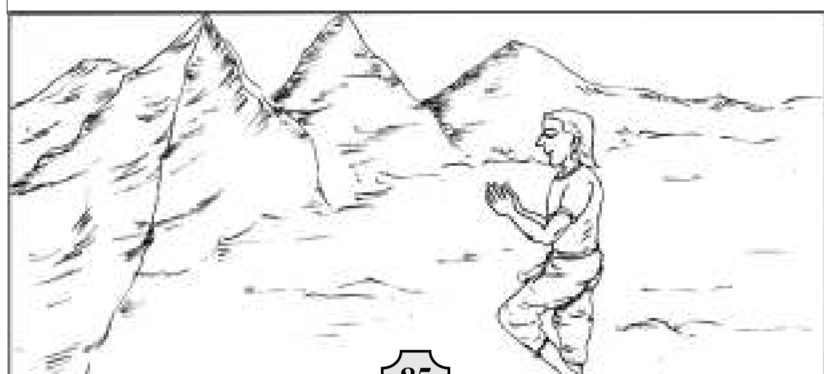




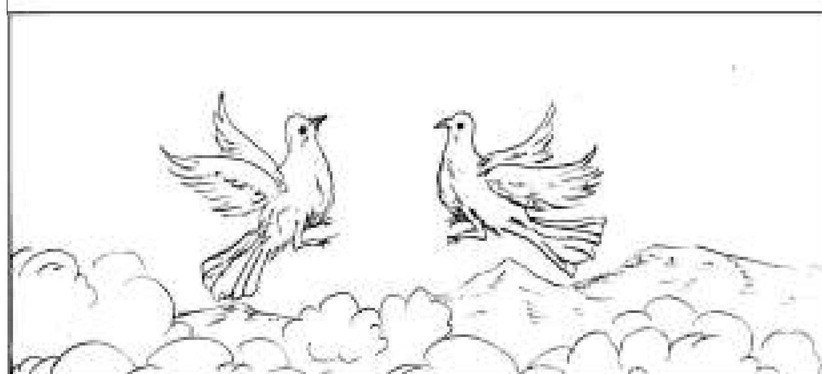


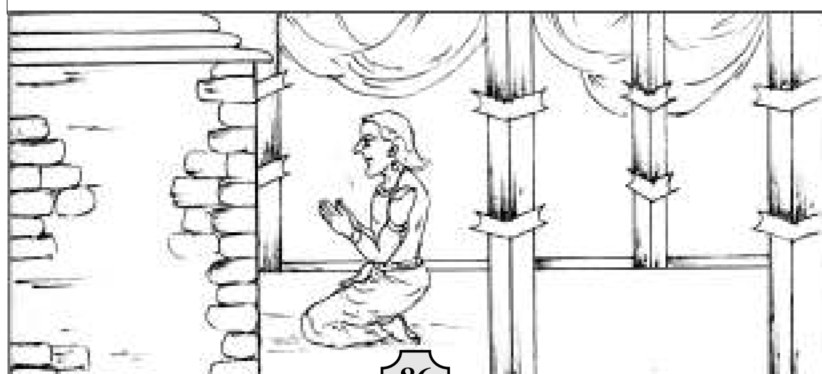






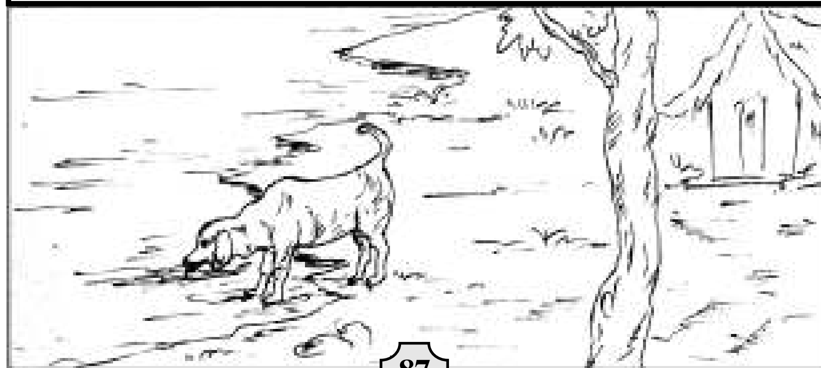




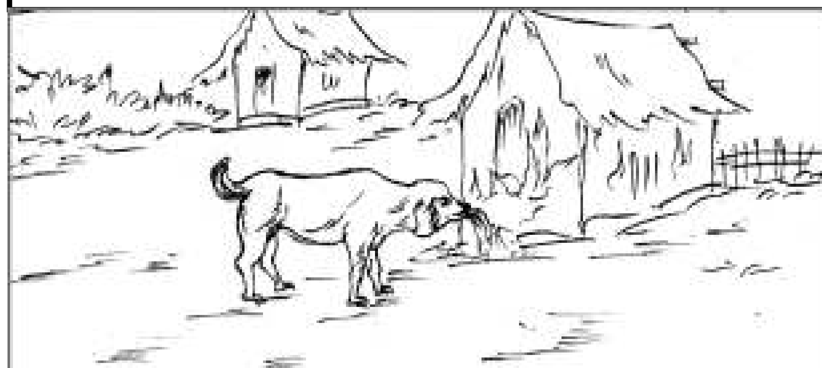




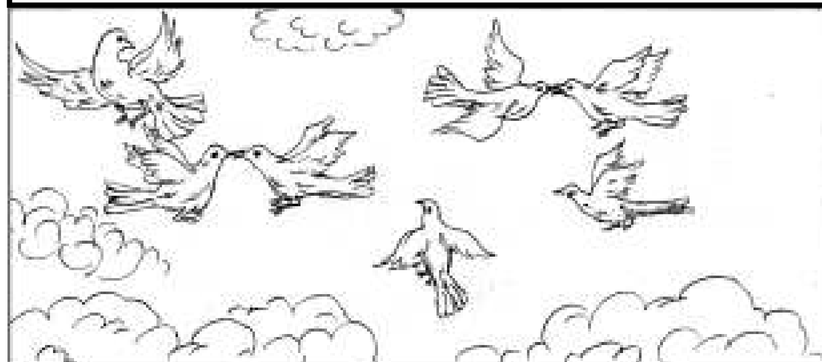


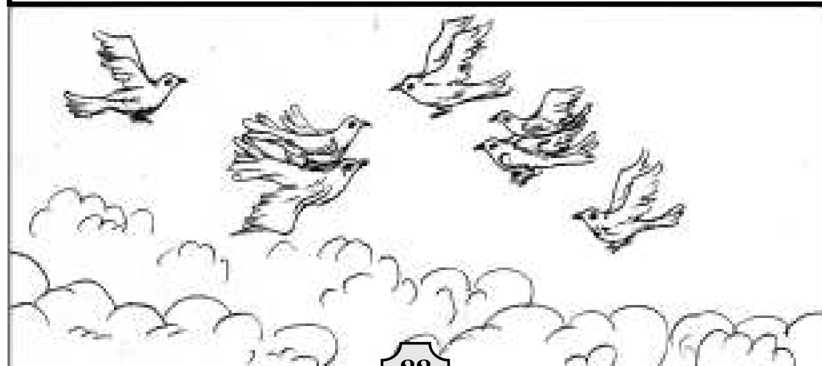


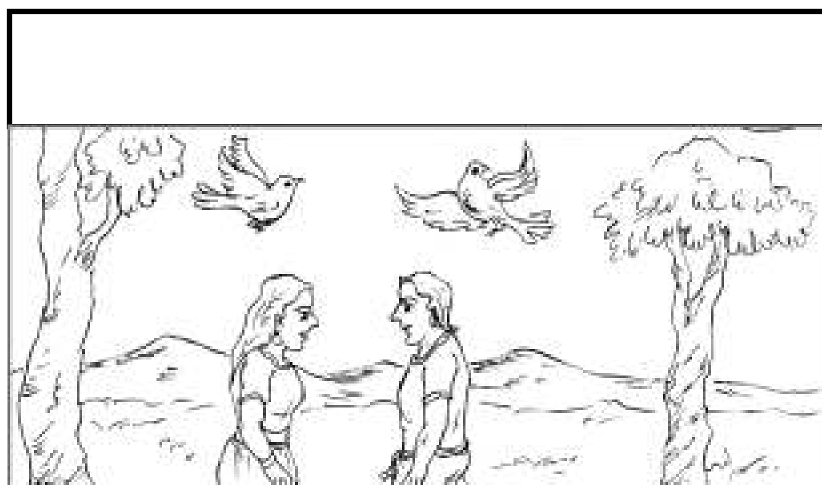


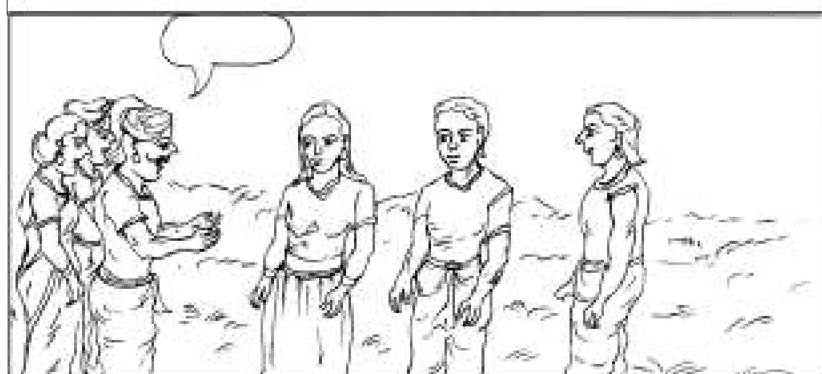












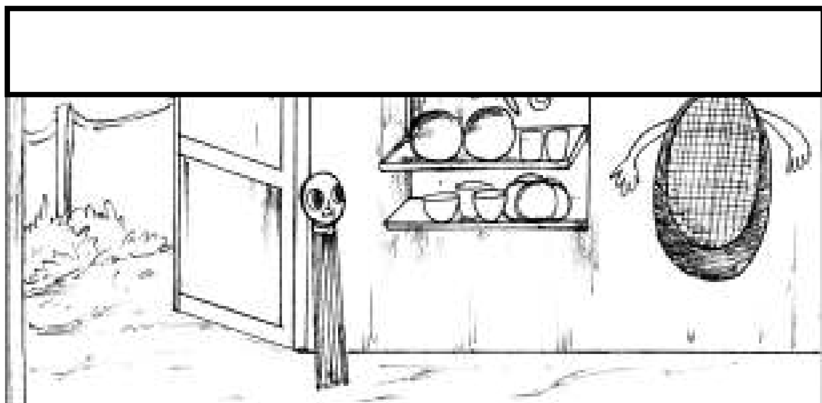


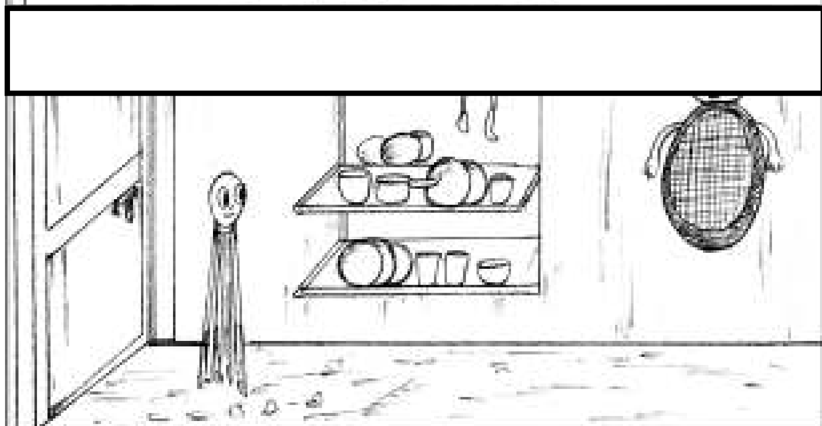


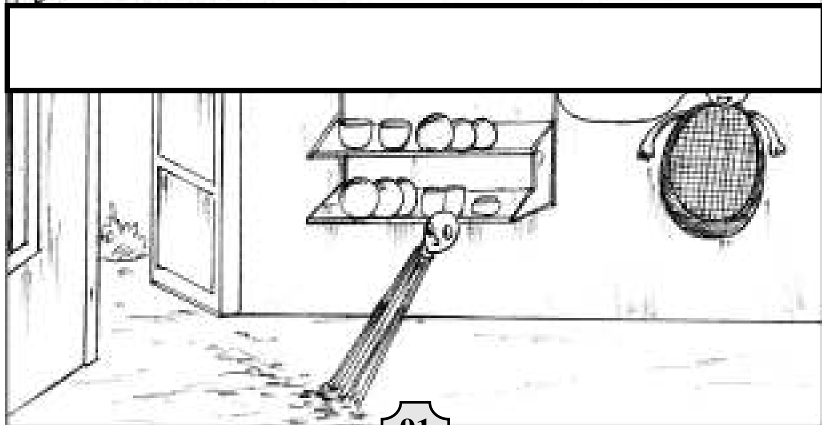


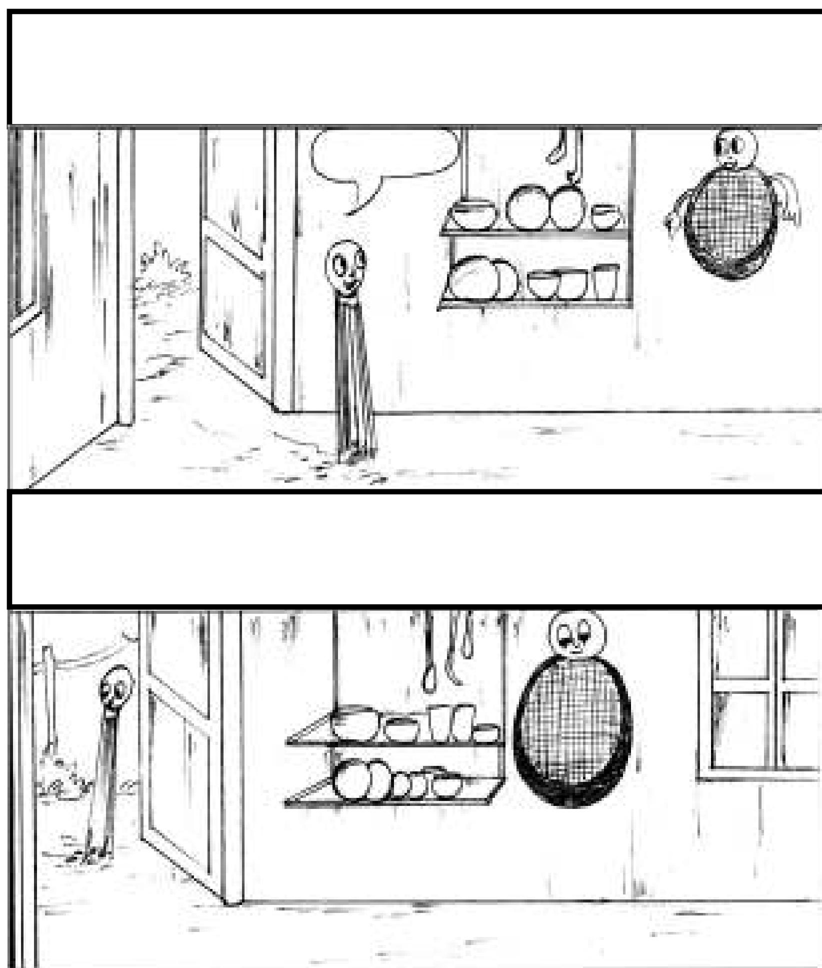


१५. चालनि-बाढ़नि

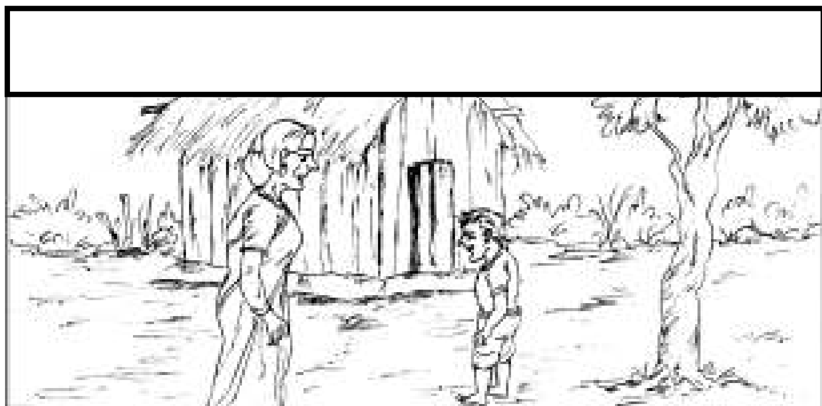


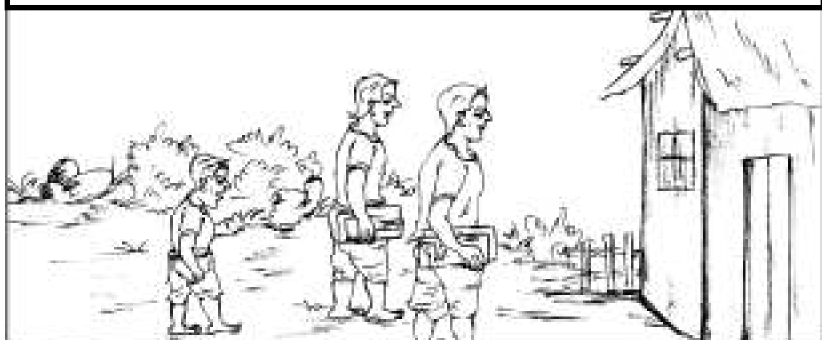




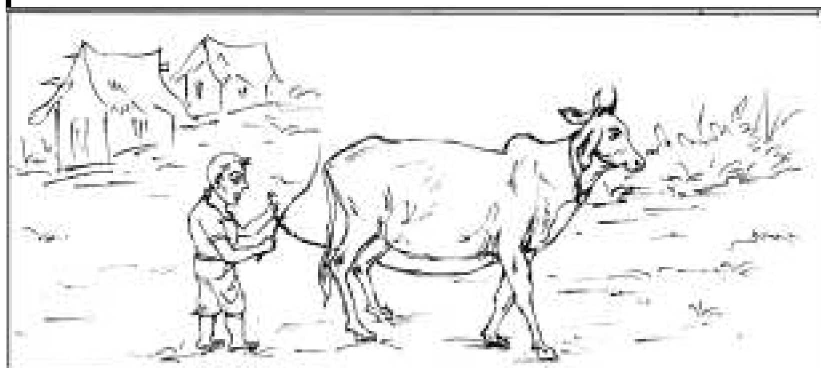


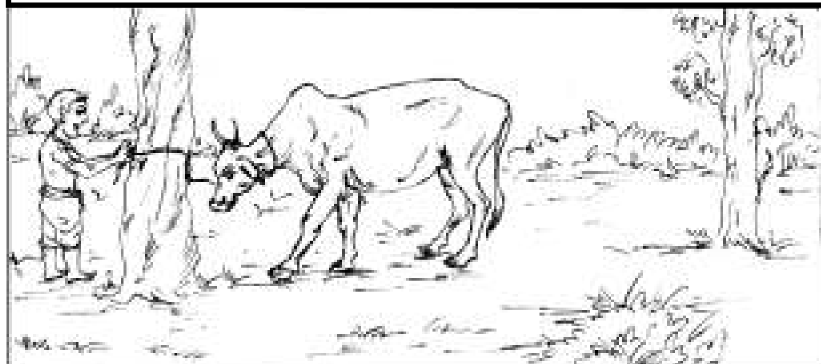
१६. डेढ़ बितना





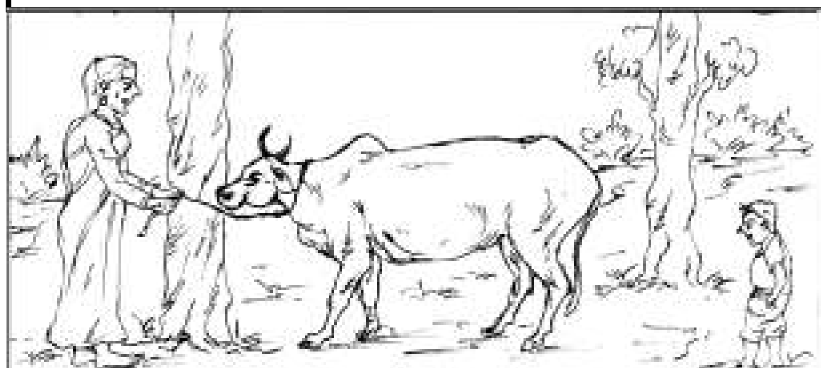


























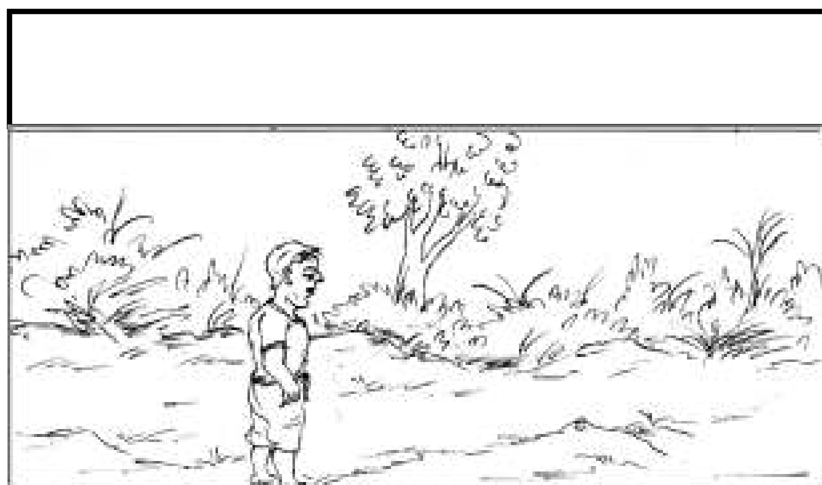


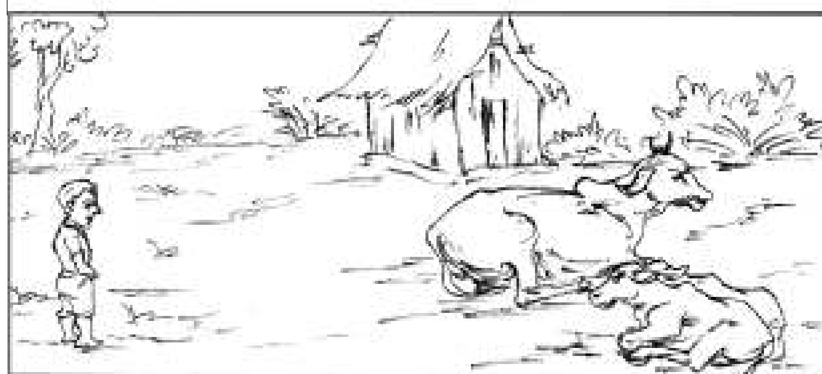








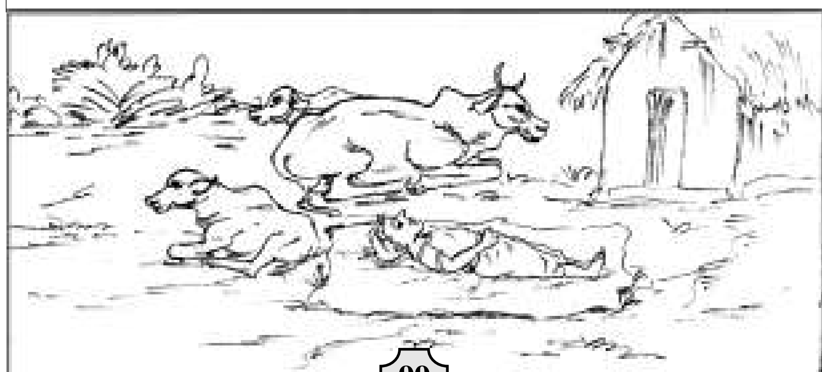


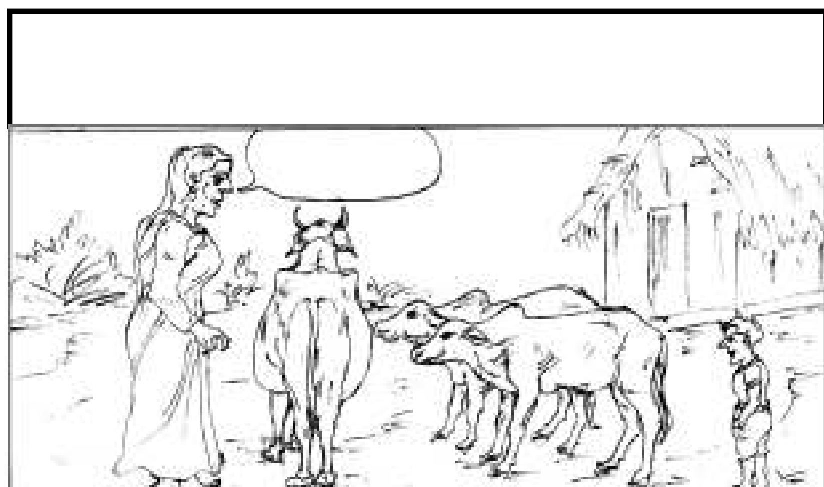


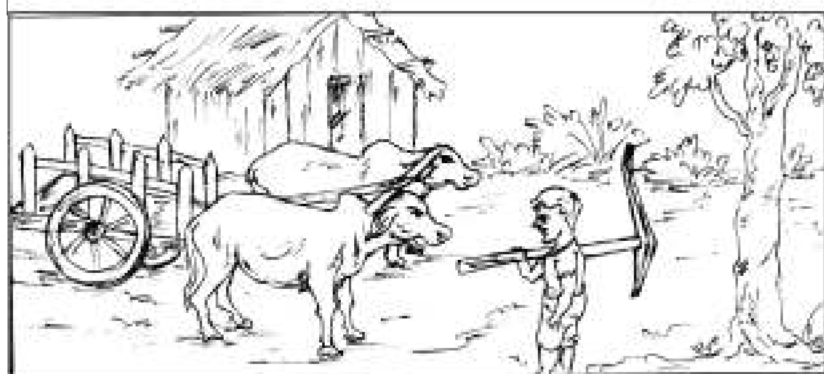




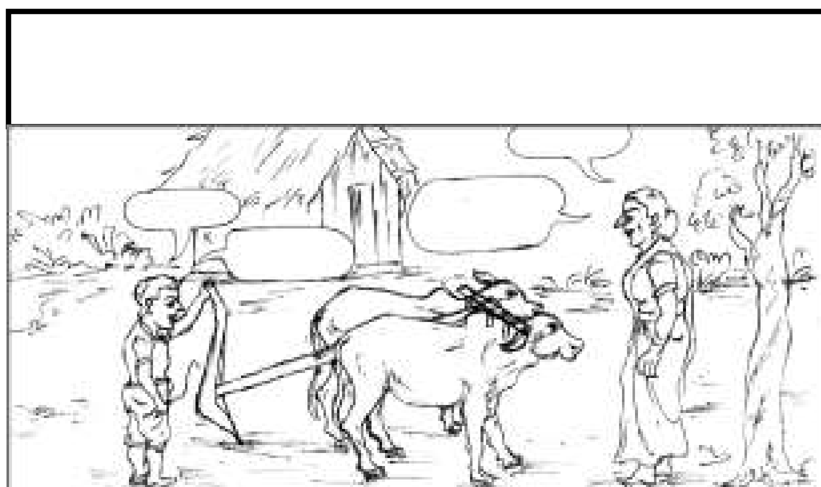


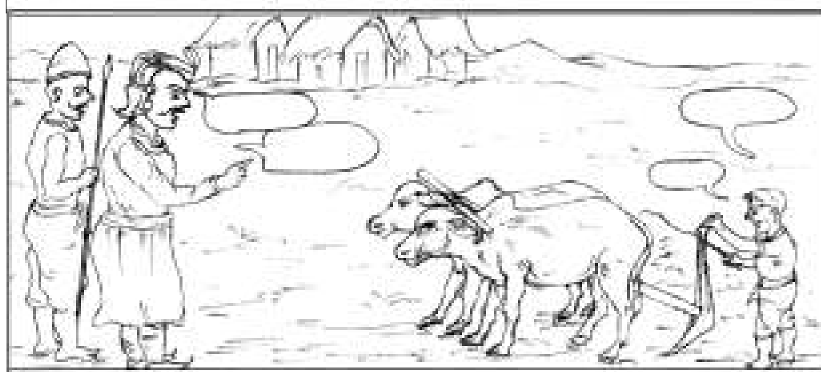


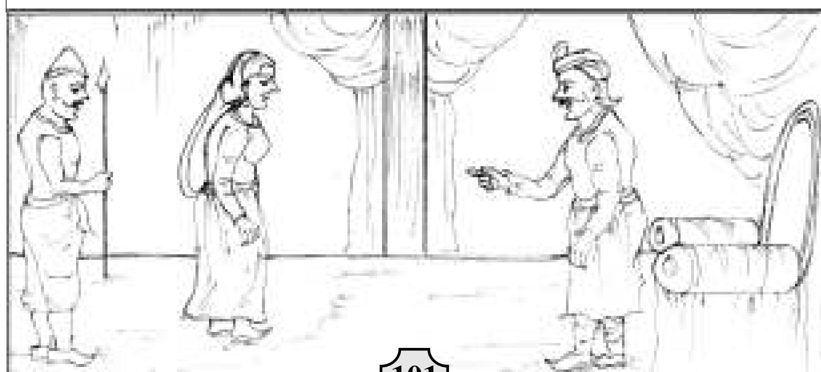


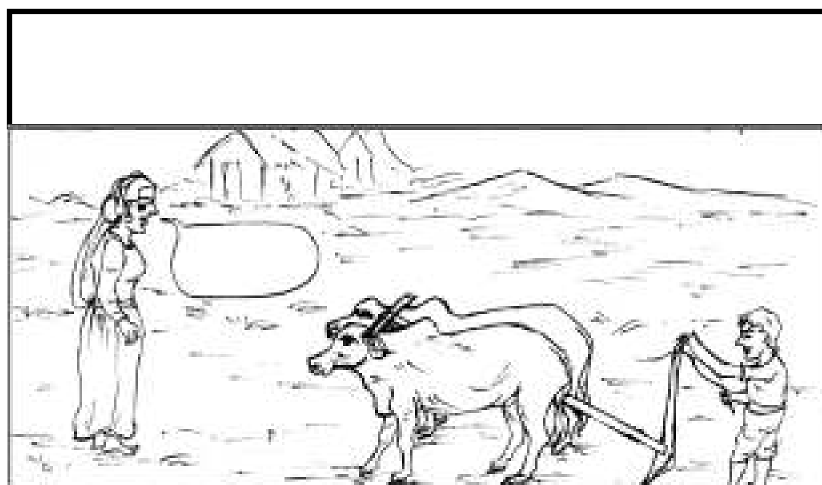


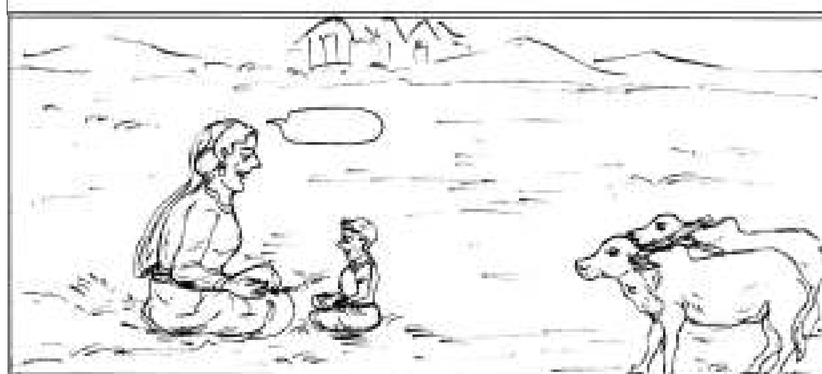




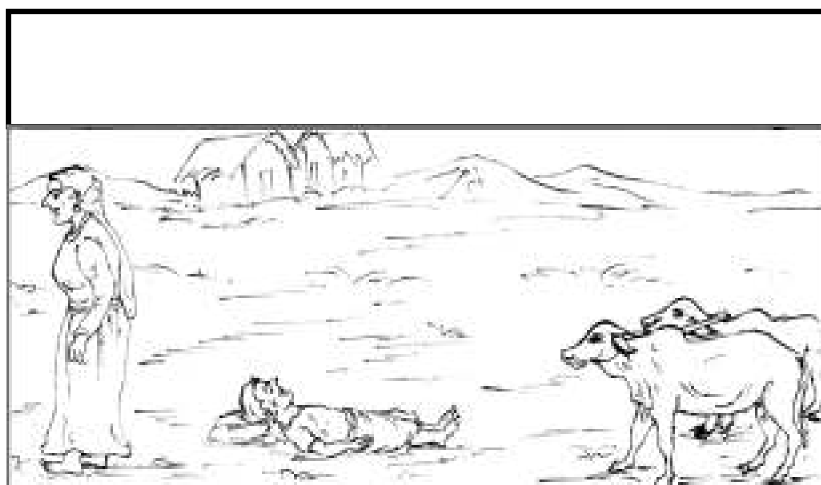


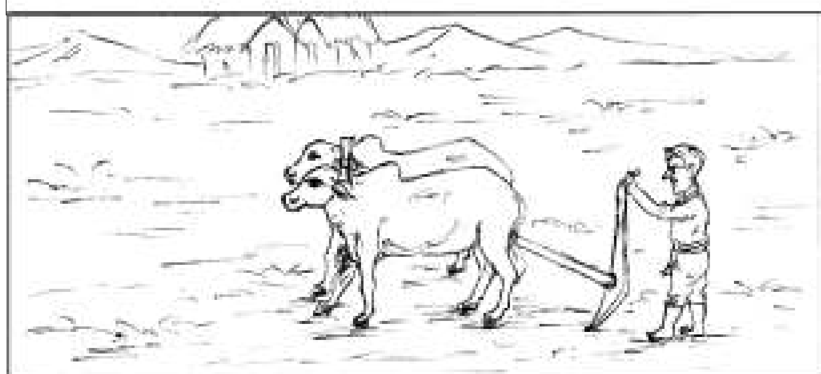


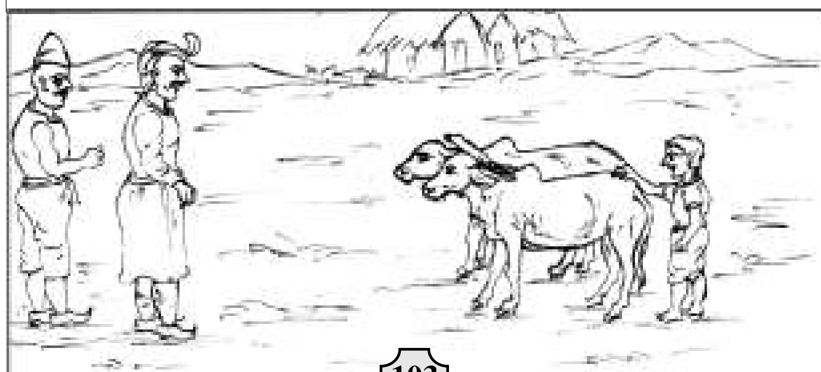








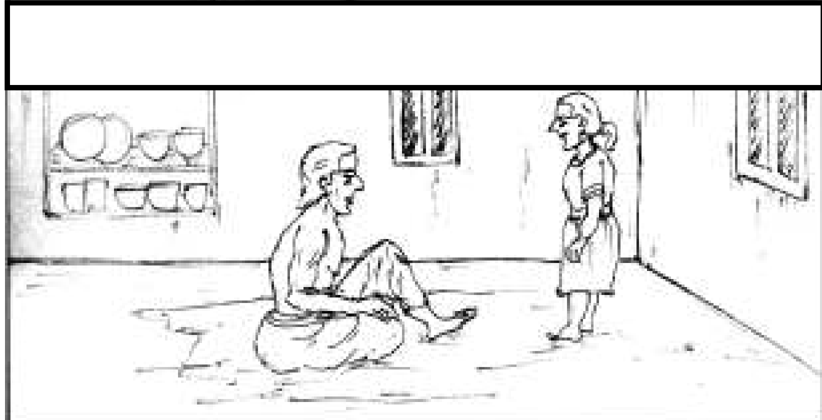




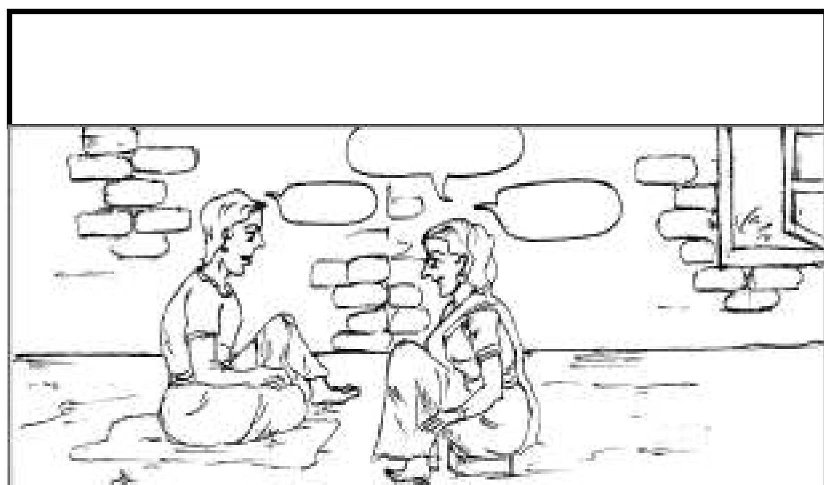


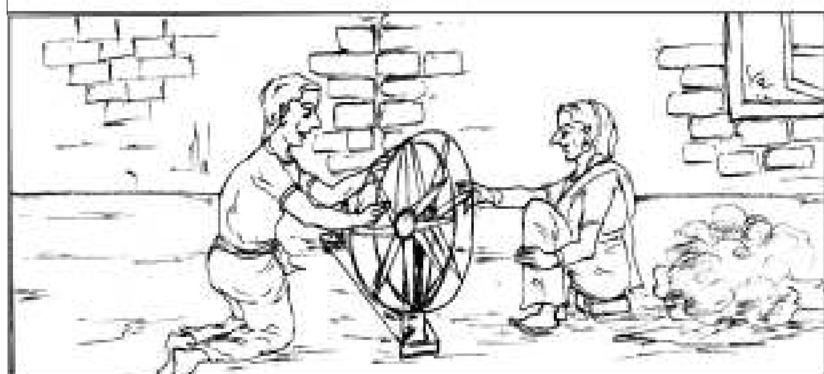
१७. जेहन करनी

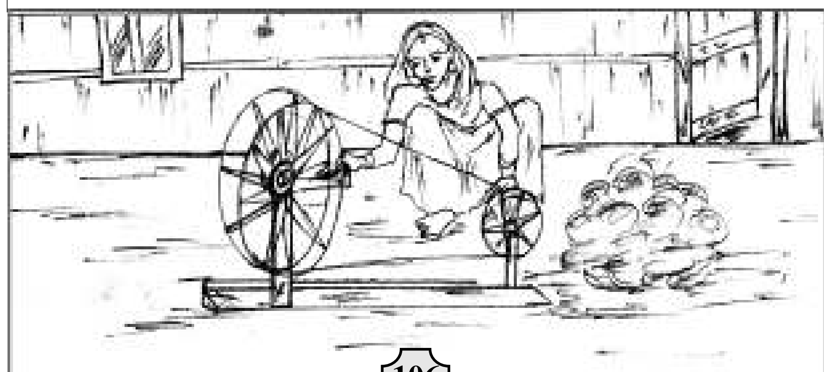








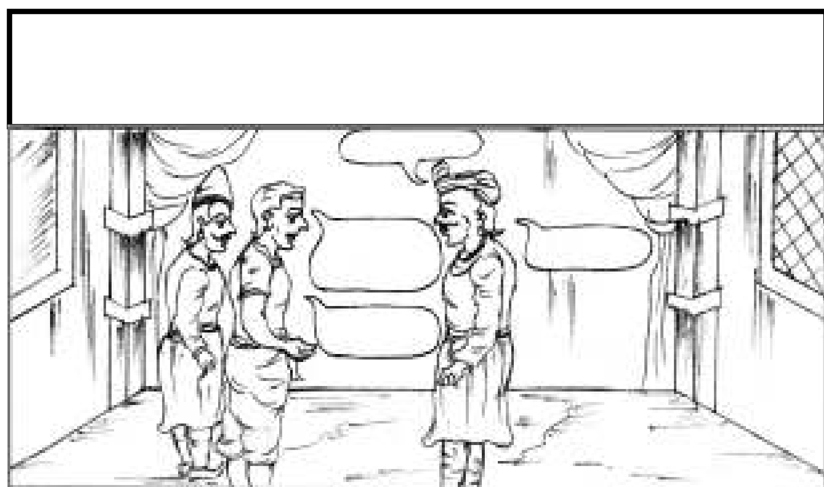








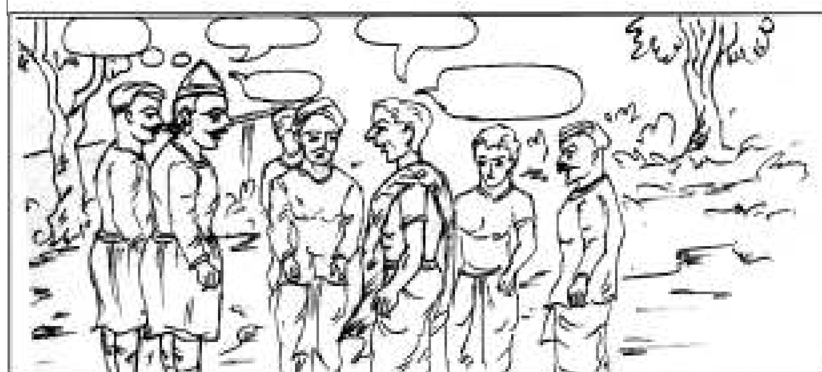


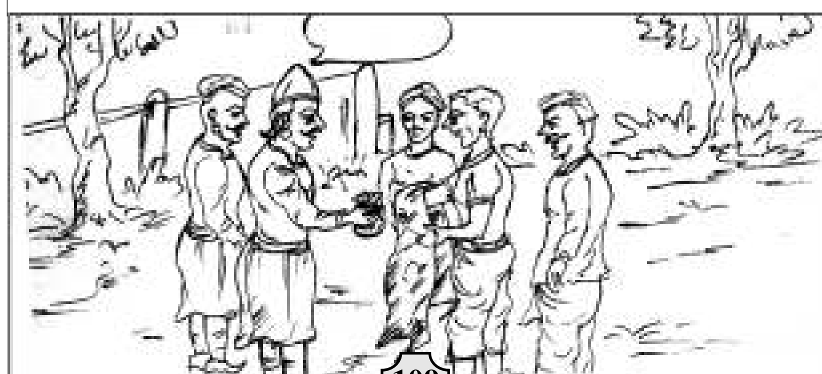








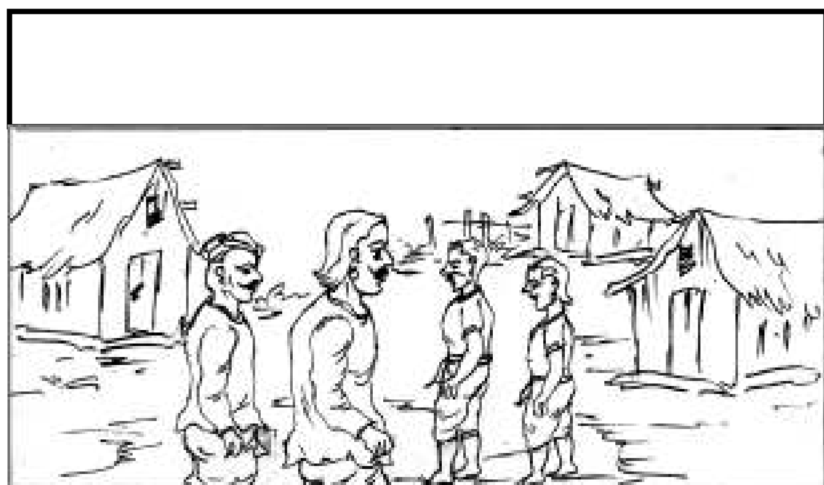














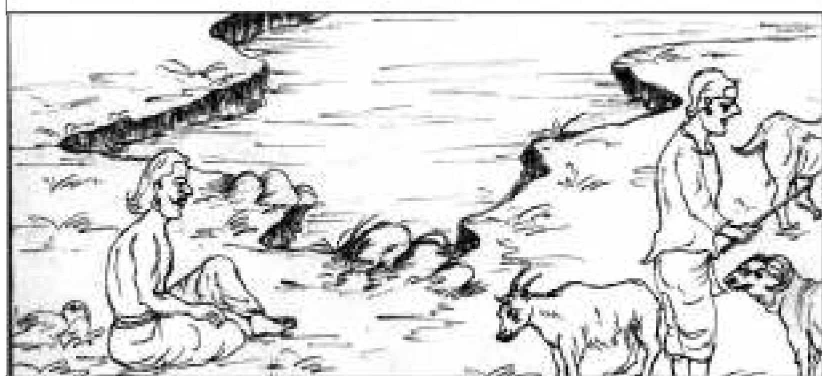
















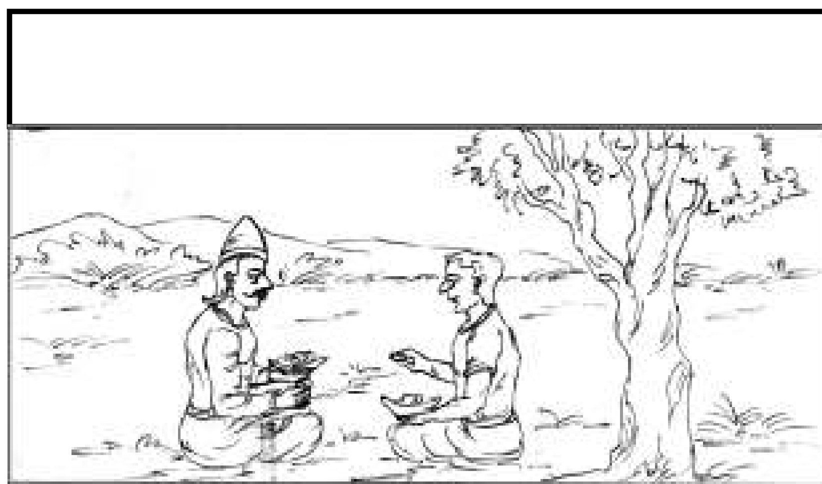


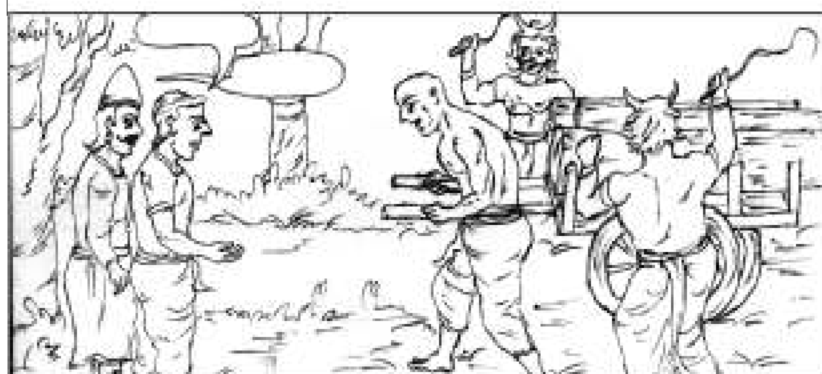






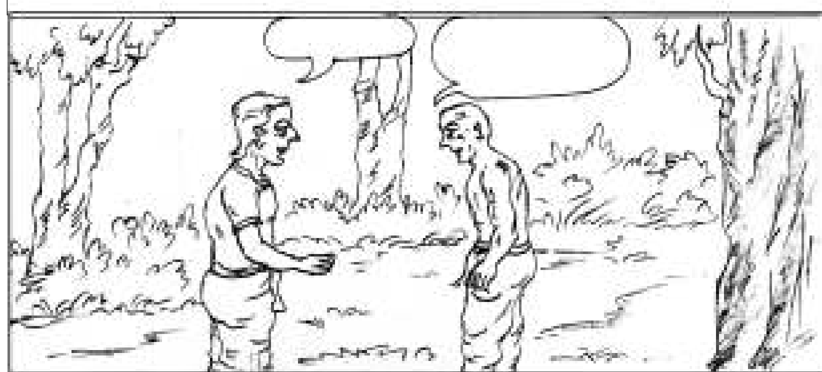




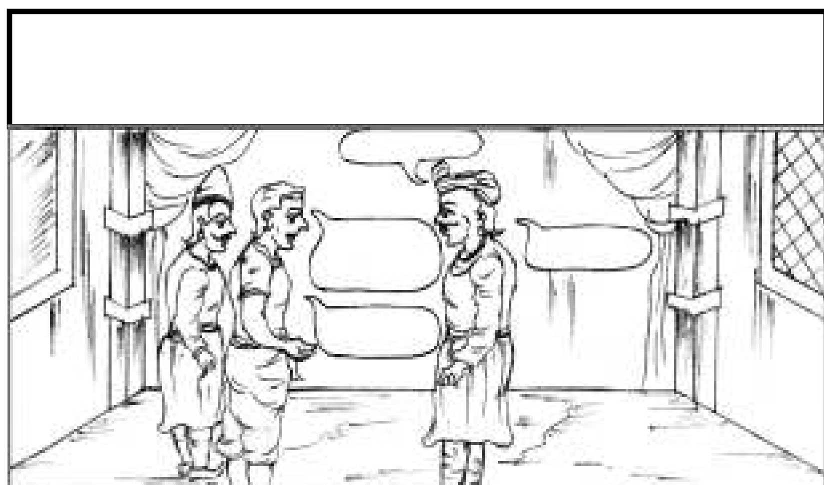








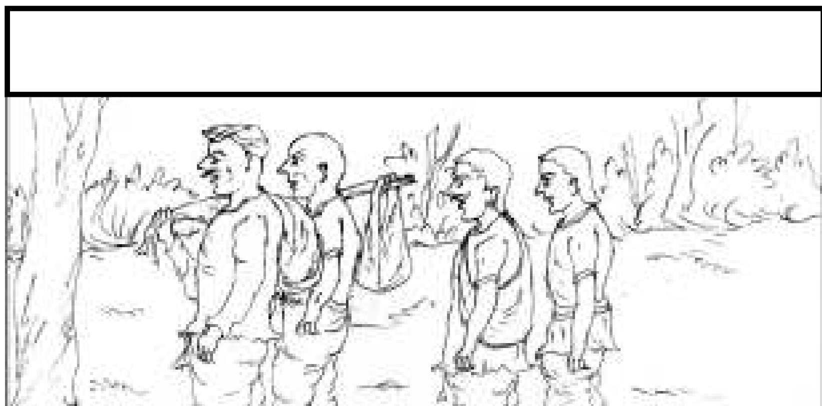






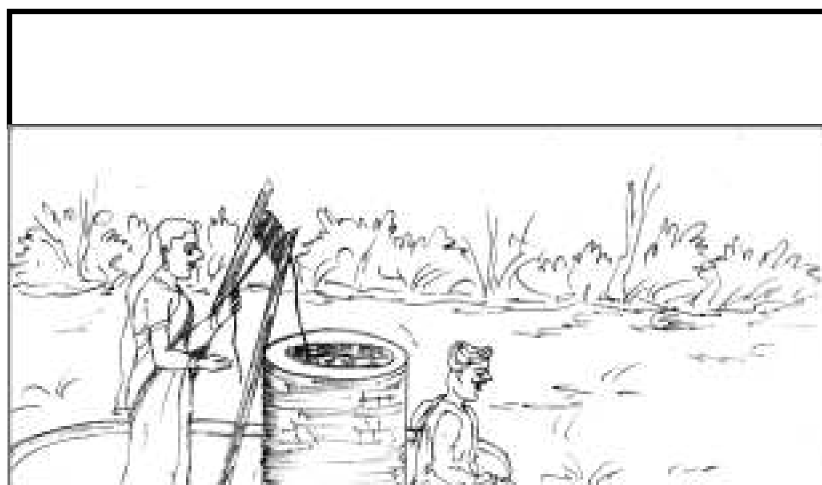


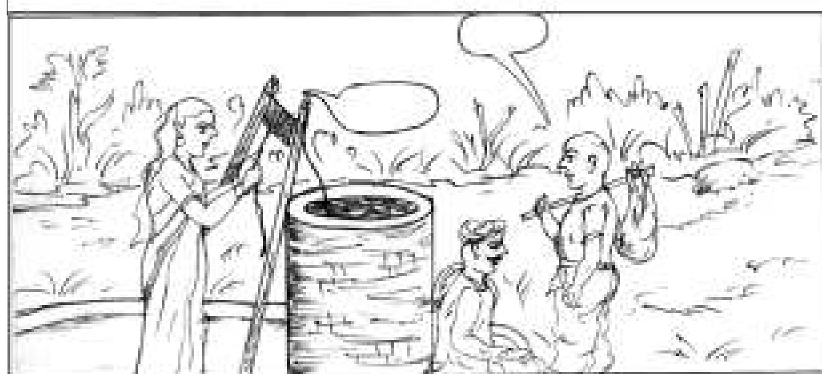
१८. चारि बटोही



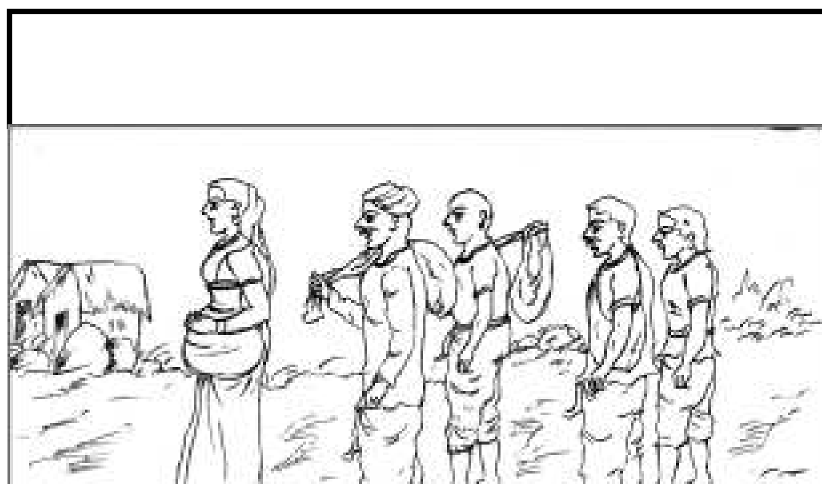




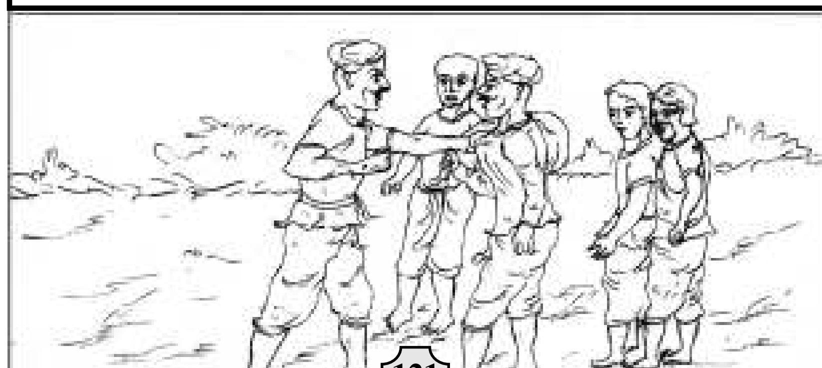


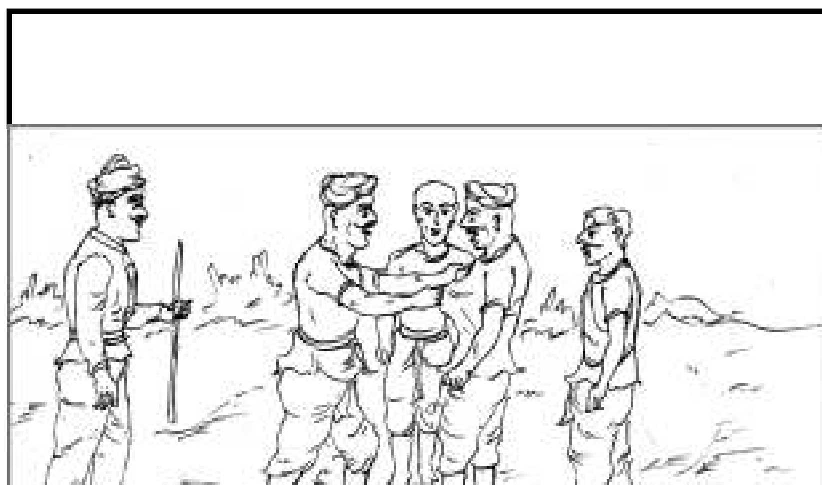




















प्रीति ठाकुर

जन्म 3 जून 1977, ग्राम-जगेली, भाया-तारानगर, पूर्णियाँ। वनस्पति विज्ञानमे स्नातक। हिनकर मैथिलीमे दूटा पोथी ''गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा'' आ ''मैथिली चित्रकथा'' प्रकाशित छन्हि।



श्रुति प्रकाशन

कार्यालयः 8/21, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली-110008

दूरभाषः (011) 25886656-58 फैक्सः (011) 25886657

website: http://www.shruti-publication.com

email: shruti.publication@shruti-publication.com


ISBN: 978-93-80538-24-2

Rs. 200/- US $80